حبابِ سخن

کشوری لال

حبابِ سخن

کشوری لال

سمکالین پرکاشن
2762، راج گورو مارگ، پہاڑ گنج، نئی دلّی 110055

~~V-231 راجوری گارڈن، نئی دہلی۔ 110027~~
~~ٹیلی فون : 5117911~~

قیمت : ساٹھ روپے
US $8

ناشر : سمکالین پرکاشن
2762، راج گوردمارگ، پہاڑ گنج،
نئی دہلی۔ 110055

ISBN : 81-7083-165-2

کمپوزنگ : انجمن کمپیوٹر ٹریننگ سینٹر، 212 راؤز ایونیو، نئی دہلی۔ ۲
ٹیلی فون : 3237210, 3236299

طباعت : بیسٹ گولڈن آف سیٹ پرنٹرز
61 میونسپل مارکٹ، کناٹ سرکس، نئی دہلی۔ 110001
ٹیلی فون: 3312650

شاعر سے تعارف

☆ 1929 میں مظفر گڑھ (اب پاکستان میں) دریائے چناب کے مغربی کنارے سے چھ میل دور، ایک چھوٹے سے شہر میں پیدائش ہوئی۔

☆ ہائی اسکول پاس کرنے کے بعد 1947 میں ہندوستان ہجرت کر کے آئے۔

☆ M.A. (انگریزی) پنجاب یونی ورسٹی سے اور L.L.B. دہلی یونی ورسٹی سے کیے۔

☆ 1956 سے 1981 تک وزارت امورِ خارجہ میں کام کرنے کے بعد اپنی رضا سے ملازمت سے علیحدگی کرلی۔

☆ خارجی تقرری میں بنگلہ دیش 'برما' پاکستان، انڈونیشیا، جاپان اور امریکہ شامل ہیں۔

☆ وہ انگریزی اور ہندی میں بھی لکھتے ہیں۔

☆ انگریزی میں اُن کی پہلی کتاب Ravna And Other Poems اور ہندی میں काव्य तरंगिणी ہیں۔

فہرست

میرے بڑے بھائی صاحب

مرحوم نقش صحرائی کے نام

میں بھی کتنا پاگل ہوں

میں بھی کتنا پاگل ہوں
گرد میں گلِ خنداں کو ڈھونڈ تا ہوں
خون جگر میں لعل د گہر
پتھر میں دلِ دلبر کو ڈھونڈ تا ہوں

میں بھی کتنا پاگل ہوں
مے خانے میں نجاتِ فکر کو ڈھونڈ تا ہوں
دولت میں عمرِ جاوداں
تعصب میں جنت کو ڈھونڈ تا ہوں

میں بھی کتنا پاگل ہوں
ببول میں مقامِ آرائش کو ڈھونڈ تا ہوں
خوابوں میں تکمیلِ مقاصد
مفلسی میں خدا کو ڈھونڈ تا ہوں

میں بھی کتنا پاگل ہوں
نقارہِ جنگ میں امن کو ڈھونڈ تا ہوں
جمہوریت میں خودداری
لُٹیروں میں ترازد کو ڈھونڈ تا ہوں

میں بھی کتنا پاگل ہوں
شاہی مقبروں میں تہذیبِ گزشتہ کو ڈھونڈ تا ہوں
کر کے ناپاک زمینِ پاک کو
چاند ستاروں میں نئی دنیا کو ڈھونڈ تا ہوں

मैं भी कितना पागल हूँ

मैं भी कितना पागल हूँ
गर्द[1] में गुल–ए–खंदां[2] को ढूँढता हूँ
खून–ए–जिगर में लाल–ओ–गोहर[3]
पत्थर में दिल–ए–दिलबर[4] को ढूँढता हूँ

मैं भी कितना पागल हूँ
मैख़ाने[5] में नजात–ए–फ़िक्र[6] को ढूँढता हूँ
दौलत में उम्र–ए–जाविदां[7]
तास्सुब[8] में जन्नत को ढूँढता हूँ

मैं भी कितना पागल हूँ
बबूल में मक़ाम–ए–आराइश[9] को ढूँढता हूँ
ख़्वाबों में तकमील–ए–मक़ासिद[10]
मुफ़लिसी[11] में खुदा को ढूँढता हूँ

मैं भी कितना पागल हूँ
नक़्क़ारा–ए–जंग[12] में अमन[13] को ढूँढता हूँ
जम्हूरियत[14] में ख़ुददारी[15]
लुटेरों में तराजू को ढूँढता हूँ

मैं भी कितना पागल हूँ
शाही मक़बरों[16]में तहज़ीब–ए–गुज़श्ता[17]को ढुँढता हूँ
कर के नापाक[18] ज़मीन–ए–पाक[19] को
चाँद सितारों में नई दुनिया को ढूँढता हूँ

---

1. मिट्टी, 2. प्रफुल्लित पुष्प, 3. क़ीमती पत्थर, 4. प्रेमी का दिल, 5. मधुशाला, 6.चिंता से मुक्ति, 7 सर्वदा आयु, 8. कट्टर पन, 9. श्रृंगार कक्ष, 10. लक्षय की पूर्ति, 11. निर्धनता, 12. बिगुल, 13. शाँति, 14. लोकतंत्र, 15. स्वाभिमान, 16. राजकीय समाधियाँ, 17, पुरानी सभ्यता, 18. अपवित्र, 19.पवित्र भूमि,

نظم

میں تمھارا ممنون ہوں میرے محبوب
تم نے مجھے درد دیا
تم نے مجھے رنج دیا
جو بھی دیا کثرت سے دیا

ہر ننھا درد
ہر ننھا رنج
جو مجھے ملتا ہے
روز بروز کی کڑواہٹ سے
جذب ہو جاتا ہے
اس درد کی شدت میں
اس رنج کے احساس میں
جو تم نے مجھے دیا

قطعہ

جس جنت سے نکالا گیا بے آبروی سے
خواب دیکھتا ہے آدمی اُسی دنیا میں جانے کی
کر کے نظر انداز ارض و سما کی نعمتیں
کرتا ہے شب و روز دعا اِرم کو پانے کی

नज़्म

मैं तुमहारा ममनून[1] हूँ मेरे महबूब
तुमने मुझे दर्द दिया
तुमने मुझे रंज[2] दिया
जो भी दिया कसरत[3] से दिया

हर नन्हा दर्द
हर नन्हा रंज
जो मुझे मिलता है
रोज़–बरोज़[4] की कड़वाहट से
जज़्ब[5] हो जाता है
उस दर्द की शिद्दत[6] में
उस रंज के एहसास[7] में
जो तुमने मुझे दिया

क़ता

जिस जन्नत[8] से निकाला गया बेआबरूई[9] से
ख़ाब देखता है आदमी उसी दुनिया में जाने की
कर के नज़र अंदाज़[10] अर्ज़–ओ–समा[11] की नेमतें[12]
करता है शब–ओ–रोज़[13] दुआ इरम[14] को पाने की

---

1. आभारी, 2. दुःख, 3. अधिकता, 4. दिन प्रति दिन, 5. घुल, 6. तेज़ी, तीव्रता, 7.अनुभव, 8. स्वर्ग, 9. अपमान, 10. स्वीकार न करना, ठुकराना, 11. पृथ्वी और आकाश, 12. प्रदान, 13. दिन रात, 14. स्वर्ग,

داغ

یہ جو تم دیکھتے ہو بھدا داغ
میرے بدنما چہرے پر
نہ تو یہ پیدائشی ہے
نہ کسی گھاؤ کا نشان

یہ داغ ہے وقت کا
وقت کی چوٹ کا
وقت جو خود چلتا ہے
دوسروں کو نہیں چلنے دیتا
کہیں نہ کہیں توڑ کر
رکھ دیتا ہے ہر انسان کو

آئینے میں اپنی ہی شکل
دیکھتے ہوئے ڈر لگتا ہے
کبھی کبھی میں انکار کرتا ہوں
قبول کرنے سے

یہ میرا ہی چہرہ ہے
یا کسی مجروح کا عکس

قطعہ

آخر وہ آہی گئی لاکھ دعاؤں کے بعد
موسم گرما میں برسات محبوب سے کم نہیں
انسان تو کیا زمین کی بھی نکلی بھڑاس
سوئیں گے چین سے بجلی پانی کا غم نہیں

दाग़

यह जो तुम देखते हो भद्दा दाग़
मेरे बदनुमा[1] चेहरे पर
न तो यह पैदाइशी[2] है
न किसी घाव का निशान

यह दाग़ है वक़्त का
वक़्त की चोट का
वक्त जो ख़ुद चलता है
दूसरों को नहीं चलने देता
कहीं न कहीं तोड़ कर
रख देता है हर इंसान को

आईने में अपनी ही श्क्ल
देखते हुए डर लगता है
कभी कभी मैं इंकार करता हूँ
कबूल[3] करने से
यह मेरा ही चेहरा है
या किसी मजरूह[4] का अक्स[5]

क़ता

आख़िर वह आ ही गई लाख दुआओं के बाद
मौसम–ए–गर्मा में बरसात महबूब से कम नहीं
इंसान तो क्या ज़मीन की भी निकली भड़ास
सोएँगे चैन से बिजली पानी का ग़म नहीं

1. कुरूप, 2. जन्म से, 3. मानने से, 4. ज़ख़्मी, 5. प्रतिबिंब, परछाईं,

خلا

ڈھونڈ تا ہوں آج بھی
اپنی ہستی کو
دل کی گہرائی میں
کوئی نشان نہیں ملتا

بھٹک رہا ہوں کب سے
جُستجوئے یار میں
تکمیلِ آرزو کا
کوئی سامان نہیں ملتا

سیلاب ناامیدی بہالے گیا
سب ارمانوں کو
دل کے بہلانے کے لیے
کوئی ارمان نہیں ملتا

خود پرستی نے بنادیا
ہر بشر کو بیگانہ
جو سمجھے انسان کو انسان
ایسا انسان نہیں ملتا

ख़ला[1]

ढूँढता हूँ आज भी
अपनी हस्ती[2] को
दिल की गहराई में
कोई निशान नहीं मिलता

भटक रहा हूँ कब से
जुस्तजू[3]–ए–यार में
तकमील–ए–आर्जू[4] का
कोई सामान नहीं मिलता

सैलाब[5]–ए–नाउम्मीदी बहा ले गया
सब अरमानों[6] को
दिल के बहलाने केलिए
कोई अरमान नहीं मिलता

ख़ुद परस्ती[7] ने बना दिया
हर बशर[8] को बेगाना[9]
जो समझे इंसान को इंसान
ऐसा इंसान नहीं मिलता

---

1. शून्य, खोखला, 2. अस्तित्व, 3. खोज, 4. इच्छापूर्ति, 5. निराशा का तूफ़ान, 6. अभिलाषाएँ, आकांक्षाएँ, 7. अभिमान, घमंड, 8. व्यक्ति, 9. पराया,

صحیح انسان

پھرتے ہیں آزاد بے خوف
آدمی کا شکار کرنے والے
نہ ہو جہاں جان کا اندیشہ
ایسا کوئی مکان نہیں ملتا

اس ظلم و تشدد کی دنیا میں
تھے ہمارے اجداد عقیدت مند
بہت ڈھونڈا انہیں زمین پر
ہمیں کوئی سامان نہیں ملتا

جو ہم نے پڑھا تواریخ میں
جنگ لوٹ مار کے سوا کچھ نہ تھا
جو تھے دو چار امن پسند
ان کا کہیں نشان نہیں ملتا

ہیں ہم سادہ لوح نہیں جانتے
کب رہے سب مل جل کر ایک ساتھ
جو جیے دوسروں کے لیے
ایسا کوئی انسان نہیں ملتا

قطعہ

ہم نے بھی کی کئی کوششیں
ہمارا نام ہو جائے عاشقوں میں شمار
حیف کوئی دل لگانے والا نہ ملا
جس سے دل لگایا وہی نکلا اغیار

सही इंसान

फिरते हैं आज़ाद बेख़ौफ़
आदमी का शिकार करने वाले
न हो जहां जान का अंदेशा[1]
ऐसा कोई मकान नहीं मिलता

इस ज़ुल्म–ओ–तशद्दुद[2] की दुनिया में
थे हमारे अजदाद[3] अक़ीदत[4] मंद
बहुत ढूंढा उन्हें ज़मीन पर
हमें कोई सामान नहीं मिलता

जो हम ने पढ़ा तवारीख़[5] में
जगं लूटमार के सिवा कुछ न था
जो थे दोचार अम्नपसंद[6]
उनका कहीं निशान नहीं मिलता

हैं हम सादा लौह[7] नहीं जानते
कब रहे सब मिल जुल कर एक साथ
जो जिए दूसरों के लिए
ऐसा कोई इंसान नहीं मिलता

क़ता

हम ने भी की कई कोशिशें
हमारा नाम हो जाए आशिकों में शुमार[8]
हैफ़[9] कोई दिल लगाने वाला न मिला
जिस से दिल लगाया वही निकला अग़यार[10]

---

1. भय, 2. अत्याचार और हिंसा, 3. पूर्वज, 4. श्रद्धावान, 5. इतिहास, 6. शाँतिप्रिय, 7. सरल स्वभाव, 8. गिना जाए, 9. अफ़सोस, 10. धोखा देनेवाला,

انصاف

روزِ محشر جب پوچھے کا خدا ہم سے
بتا کیا کِیا تونے دنیا میں
ہم کہیں گے بے دھڑک اے خداوند
کیا دیا تونے جو مانگتے ہو حساب

نہ دولت دی نہ شہرت دی
نہ صحت دی نہ عظمت دی
نہ دن کو چین ملا نہ رات کو نیند
نہ عیش دیا نہ فرصت دی

بھٹکتا رہا عمر بھر
دو روٹی کی تلاش میں
توڑتا رہا پتھر سڑکوں پر
اٹھاتا رہا کوڑے کے ڈھیر

جوتتا رہا ہل کڑاکے کی دھوپ میں
کھودتا رہا کھانیں سونے کی
کوٹتا رہا لوہا کارخانے میں
پھونکتا رہا آگ بھٹی میں
کتنے فاقے کٹوائے تونے
بھیک بھی منگوائی تونے
مالک سے مار بھی دلوائی تونے
قانون کا پھندا بھی پڑا تو میرے گلے

इंसाफ़

रोज़–ए–महशर[1] जब पूछेगा ख़ुदा हम से
बता क्या किया तूने दुनिया में
हम कहेंगे बेधड़क ऐ ख़ुदावंद
क्या दिया तूने जो माँगते हो हिसाब

न दौतल दी न शुहरत[2] दी
न सेहत दी न अज़्मत[3] दी
न दिन को चैन मिला न रात को नींद
न ऐश दिया न फ़ुरसत दी

भटकता रहा उम्र भर
दो रोटी की तलाश में
तोड़ता रहा पत्थर सड़कों पर
उठाता रहा कूड़े के ढेर
जोतता रहा हल कड़ाके की धूप में
खोदता रहा खानें सोने की
कूटता रहा लोहा कारख़ाने में
फूंकता रहा आग भट्टी में

कितने फ़ाक़े[4] कटवाए तू ने
भीक भी मंगवाई तू ने
मालिक से मार भी दिलवाई तू ने
क़ानून का फंदा भी पड़ा तो मेरे गले

---

1. क़यामत के दिन, 2. ख्याति, 3. सम्मान, 4. अनशन, अनाहार,

کیا دیا تو نے جو مانگتے ہو حساب
کہو کچھ تو کہو ارض و سماں کے مالک
خدا کو لگیں ہماری باتیں ناگوار
کہنے لگا تلملا کر

ایک حقیر آدمی ہو کر
ہم سے کرتا ہے سوال
دنیا کے مالک سے
جھونک دو اسے دوزخ کی آگ میں

قطعات

ہمارے دیکھنے سے وہ لگاتے ہیں انداز
اُن کے چاہنے والے ابھی کتنے ہیں
کون سمجھائے اُس مغرور ماہ پارا کو
ہم کو چھوڑ کر باقی سب فتنے ہیں

کتنا چھپا لو کتنا چھپا لوگے
راز عشق کوئی راز نہیں
یہ وہ راگ ہے جس میں
سوز ہے مگر ساز نہیں

क्या दिया तूने जो माँगते हो हिसाब
कहो कुछ तो कहो अरज़–ओ–समां[5] के मालिक
ख़ुदा को लगीं हमारी बातें नागवार[6]
कहने लगा तलमला[7] कर

एक हक़ीर[8] आदमी हो कर
हम से करता है सवाल
दुनिया के मालिक से
झोंक दो इसे दोज़ख़[9] की आग में

क़तात

हमारे देखने से वो लगाते है अंदाज़[10]
उनके चाहने वाले अभी कितने है
कौन समझाए उस मग़रूर[11] माहपारा[12] को
हम को छोड़ कर बाक़ी सब फ़ितने[13] हैं

कितना छिपालो कितना छिपालोगे
राज़–ए–इश्क़ कोई राज़ नहीं
यह वह राग है जिस में
सोज़[14] है मगर साज़[15] नहीं

---

5. धरती और आकाश, 6. नापसंद, बुरी, 7. तड़प, 8. तुच्छ, 9. नरक, 10.अनुमान,
11. घमंडी, 12. सुन्दरी, 13. धूर्त, तमाशबीन, 14. तपन, जलन, 15.ध्वनि,

خباثت کی گرد

کتنی گرد جم چکی تھی
میری تصویر پر
ایک کونے میں رکھ کر
بھول گیا تھا میں اسے
ایک بار تو مجھے ایسا لگا
جیسے میں اپنے آپ کو بھول گیا تھا

مٹی اتنی جم چکی تھی
دکھائی نہیں دیتا تھا اپنا چہرہ
ایسا محسوس ہُوا
دفنانے سے پہلے ہی
دب گیا تھا میں
وقت کی گرد سے

میں نے دھول کو ہٹایا
آہستہ آہستہ میرا چہرہ دکھائی دینے لگا
مگر دھول اتنی جم چکی تھی
اتنی ٹھوس ہو چکی تھی
صورت ایسی بھدی لگتی تھی
جیسے چیچک کے داغ

تصویر رنگین تھی
مگر وہ رنگت نہیں تھی
ہونٹ پھیکے پڑ چکے تھے

ख़बासत[1] की गर्द

कितनी गर्द जम चुकी थी मेरी तस्वीर पर
एक कोने में रख कर
भूल गया था मैं इसे
एक बार तो मुझे ऐसा लगा
जैसे में अपने आप को भूल गया था

मिट्टी इतनी जम चुकी थी
दिखाई नहीं देता था अपना चेहरा
ऐसा महसूस हूआ
दफ़नाने से पहले ही
दब गया था मैं
वक्त की गर्द से

मैंने धूल को हटाया
आहिस्ता आहिस्ता मेरा चेहरा दिखाई देने लग़ा
मगर धूल इतनी जम चुकी थी
इतनी ठोस हो चुकी थी
सूरत ऐसी भद्दी लगती थी
जैसे चेचक के दाग़

तस्वीर रंगीन थी
मगर वह रंगत नहीं थी
होंट फ़ीके पड़ चुके थे

---

1. दुष्टता, काले कारनामें,

رخساروں کی لالی پیلی پڑ گئی تھی
سر کے بال سفید
آنکھوں کا کالا پن موتیا بند

میں الجھن میں پڑ گیا
کیا یہ میری تصویر تھی
ویسی جیسی میں نے اُتروائی تھی
میں نے آئینے میں اپنی شکل دیکھی
ہو بہ ہو ایسے لگتی تھی
دھول صاف کی ہوئی تصویر

پھر مجھے خیال آیا
میں نے کبھی کوشش نہیں کی
اپنے چہرے کو صاف رکھنے کی
خباثت کی گرد اتنی جم چکی تھی
جسے قطعی طور پر صاف کرنا
اب ناممکن ہو گیا تھا

قطعہ

دُود، گرد، غبار، آندھی، طوفان
زندگی کے ہر موڑ پر کچھ نہ کچھ پایا
شنوائی سے پہلے ہی لکھ دیا فیصلہ
اللہ تعالیٰ کو ہم نے خواہ مخواہ جگایا

रुख़सारों[2] की लाली पीली पड़ गई थी
सर के बाल सफ़ेद
आँख़ों का कालापन मोतियाबिंद

मैं उलझन में पड़ गया
क्या यह मेरी तस्वीर थी
वैसी जैसी मैंने उतरवाई थी
मैंने आईने में अपनी शक्ल देखी
हूबहू[3] ऐसे लगती थी
धूल साफ़ की हुई तस्वीर

फिर मुझे ख़याल आया
मैंने कभी कोशिश नहीं की
अपने चेहरे को साफ रखने की
ख़बासत की गर्द इतनी जम चुकी थी
जिसे क़तई[4] तौर पर साफ़ करना
अब नामुमकिन हो गया था

क़ता

दूद[5], गर्द[6], गुबार[7], आँधी, तूफ़ान
ज़िंदगी के हर मोड़ पर कुछ न कुछ पाया
शुनवाई[8] से पहले ही लिख दिया फ़ैसला
अल्लाह ताला[9] को हमने ख़ाहमख़सह जगाया

---

2. गालों, 3. बिलकुल एक जैसी, 4. निश्चित रूप से, 5. धुआँ, 6. मिट्टी, 7. हल्का अंधेरा, 8. श्रवण, 9. भगवान,

غم خوار

کوئی عہد و پیماں نہ تھا
کسی کا انتظار نہ تھا
کوئی چاہت نہ تھی
جو بھی خواب دیکھے بے معنی
جو بھی قدم اٹھائے بے مقصد
آنکھیں دیکھتی تھیں محض دیکھنے کے لیے

خوبصورت وادیاں
برفیلے پہاڑ
رقص کرتی ہوئی لہریں
گنگناتے ہوئے جھرنے
پیڑوں پر گاتے ہوئے پنچھی
شب ریگستان کی ٹھنڈی ریت
ایسا لگتا تھا
ان سب سے کچھ یادیں وابستہ تھیں
مگر تنہائی میں کوئی غم خوار نہ تھا

قطعہ

بھلا ہو تیرا اے لوٹنے والے
بوجھ ہلکا ہوا دماغ کا
میرا اپنا وجود کچھ بھی نہ تھا
ثمر تھا میں وقت کے باغ کا

ग़मख़ार

कोई अहद–ओ–पैमान[1] न था
किसी का इंतज़ार न था
कोई चाहत न थी
जो भी ख़ाब देखे बेमानी[2]
जो भी क़दम उठाए बेमक़सद[3]
आँखे देखती थीं
महज़[4] देखने के लिए

ख़ूबसूरत वादियाँ
बरफ़ीले पहाड़
रक़्स[5] करती हुई लहरें
गुनगुनाते हुए झरने
पेड़ों पर गाते हुए पंछी
शब–ए–रेगिस्तान[6] की ठंडी रेत
ऐसा लगता था
इन सब से कुछ यादें वाबस्ता[7] थीं
मगर तनहाई में कोई ग़मख़ार[8] न था

क़ता

भला हो तेरा ऐ लूटने वाले
बोझ हल्का हुआ दिमाग़ का
मेरा अपना वुजूद[9] कुछ भी न था
समर[10] था मैं वक़्त के बाग़ का

---

1. वचन, 2. निरर्थक, 3. बिना उद्देश्य के, 4. केवल, 5. नाचती, 6. मरूस्थल की रात, 7. जुड़ी हुई, 8. हमदर्द, 9. अस्तित्व, 10. फल,

تمھارا خط

تمھارا خط آ جاتا اگر
برسوں کا شبہ ہو جاتا دور
کہیں تم مجھے بھول تو نہیں گئے
یا کوئی اور تو نہیں تمھارے دل میں
کتنی راحت ملتی دلِ افسردہ کو

تمھارا خط آ جاتا اگر
کلیجے سے لگا لیتا اسے
جیسے کوئی بچھڑا ہوا ساتھی
مل جائے راہ میں اچانک
کتنی راحت ملتی دل ناشاد کو

تمھارا خط آ جاتا اگر
چراغِ امید پھر سے ہو جاتا روشن
میں پتنگا بن کر رقص کرتا گرد تمھارے
جل بھی جاتا تو افسوس نہ ہوتا
کتنی راحت ملتی دلِ آزردہ کو

تمھارا خط آ جاتا اگر
بھول جاتا دنیا کے رنج و غم
تھکی آنکھیں نہ ٹمٹماتی انتظار میں
سو جاتا چین سے پل بھر
کتنی راحت ملتی دلِ مغموم کو

तुम्हारा ख़त

तुम्हारा ख़त आ जाता अगर
बरसों का शुब्हा[1] हो जाता दूर
कहीं तुम मुझे भूल तो नहीं गए
या कोई और तो नहीं तुम्हारे दिल में
कितनी राहत[2] मिलती दिल–ए–अफ़सुर्दा[3] को

तुम्हारा ख़त आ जाता अगर
कलेजे से लगा लेता इसे
जैसे कोई बिछड़ा हुआ साथी
मिल जाए राह में अचानक
कितनी राहत मिलती दिल–ए–नाशाद[4] को

तुम्हारा ख़त आ जाता अगर
चिराग़–ए–उम्मीद[5] फिर से हो जाता रोशन
मैं पतंगा बन कर रक़्स[6] करता गिर्द तुम्हारे
जल भी जाता तो अफ़सोस न होता
कितनी राहत मिलती दिल–ए–आज़ुर्दा[7] को

तुम्हारा ख़त आ जाता अगर
भूल जाता दुनिया के रंज–ओ–ग़म[8]
थकी आँखें न टिमटिमाती इंतज़ार में
सो जाता चैन से पल भर
कितनी राहत मिलती दिल–ए–मग़मूम[9] को

---

1. शक, 2. आराम, 3. उदास मन, 4. उदास मन, 5. आशादीप, 6. नृत्य, 7. उदास मन, 8. दुःख, 9. उदासमन.

تمھارا خط آ جاتا اگر
تم جو بھی لکھتے کر لیتا قبول
تمھارا ایک ایک حرف باعثِ تسلی ہوتا
عمرِ بے معنی کو مل جاتا جینے کا مقصد
کتنی راحت ملتی دلِ افگار کو

قطعات

میاں بچاؤ اپنی ٹوپی کو
ہوائے زمانہ بہت تیز ہے
آسان نہیں اُن تک پہنچنا
کرُسی کے آگے دھری میز ہے

مانا میری زندگی میرے اختیار میں نہیں
کب تک مگر رکھے گا تو زندہ مجھے
عاجز انسان کا جینا بھی کیا جینا ہے
ہونا پڑتا ہے سب کے آگے شرمندہ مجھے

روزِ اوّل سے کائنات بے ثبات تھی
جو ایک بار گرا گر کے نہ اُٹھ سکا
جوڑ دیا جسم کے ساتھ خالی پیٹ
تلاشِ روزگار میں چین سے نا بیٹھ سکا

तम्हारा ख़त आ जाता अगर
तुम जो भी लिखते कर लेता क़बूल[10]
तुम्हारा एक एक हरफ़[11] बाइस–ए–तसल्ली[12] होता
उम्र–ए–बेमानी[13] को मिल जाता जीने का मक़सद[14]
कितनी राहत मिलती दिल–ए–अफ़गार[15] को

क़तात

मियाँ बचाओ अपनी टोपी को
हवा–ए–ज़माना बहुत तेज़ है
आसान नहीं उन तक पहुंचना
कुर्सी के आगे धारी मेज़ है

माना मेरी ज़िंदगी मेरे इख़्तियार[16] में नहीं
कब तक मगर रखोगा तू ज़िन्दा मुझे
आजिज़[17]इंसान का जीना भी क्या जीना है
होना पड़ता है सब के आगे शर्मिंदा मुझे

रोज़–ए–अव्वल[18] से काइनात[19] बेसबात[20] थी
जो एक बार गिरा गिरके न उठ सका
जोड़ दिया जिस्म के साथ ख़ाली पेट
तलाश–ए–रोज़गार[21] मै चैन से ना बैठ सका

10. स्वीकार, 11. शब्द, 12. तसल्ली का कारण, 13. अर्थहीन जीवन, 14. अर्थ, 15. दुःखीमन, 16. बस, वश, 17. विवश, 18. पहले दिन से, 19.जगत, प्राणीवर्ग, 20. निराधार, 21. व्यवसाय की खोज में,

روشِ قدم

جو قدم کبھی رک جاتے تھے چلتے چلتے
دیکھ لوں حسینوں کے جمگھٹے
وہ شوخ تتلیاں وہ نازک کلیاں
جوشِ جوانی سے اُچھلتی پریاں
وہی قدم آج بے زار ہیں زندگی سے

غم وعدہ شکنی کا نہیں
رنج بے مروتی کا نہیں
مگر کچھ ایسا ہوتا ہے احساس
عمر حساب مانگتی ہے گناہوں کا
وہی قدم آج طلب گار ہیں زندگی سے

رُباعیات

جاتے جاتے وہ کیا کیا نہ کہہ گئے
ہم ان کا منہ دیکھتے ہی رہ گئے
جب بات ہو دل کی تو دلالت کیسی
ہم کھڑے کھڑے خیالات میں بہہ گئے

دولت ہو پاس معاف سب گناہ
مفلس کے بچنے کی نہیں کوئی راہ
خوش حالی میں ہیں سب ہم نوا
غم زدہ کو کون دیتا گھر میں پناہ

रविश–ए–क़दम

जो क़दम कभी रूक जाते थे चलते चलते
देख़ लूँ हसीनों के जमघटे
वे शोख़[1] तितलियाँ वे नाज़ुक कलियाँ
जोश–ए–जवानी से उछलती परियाँ
वही क़दम आज बेज़ार[2] हैं ज़िंदगी से

ग़म वादा शिकनी[3] का नहीं
रंज[4] बेमुरव्वती[5] का नहीं
मगर कुछ ऐसा होता है एहसास[6]
उम्र हिसाब मांगती है गुनाहों का
वही क़दम आज तलबगार[7] हैं ज़िंदगी से

रूबाइयात

जाते जाते वह क्या क्या न कह गए
हम उनका मुँह देखते ही रह गए
जब बात हो दिल की तो दलालत[8] कैसी
हम खड़े खड़े ख़्यालात में बह गए

दौलत हो पास माफ़ सब गुनाह
मुफ़लिस[9] के बचने की नहीं कोई राह
ख़ुशहाली[10] में हैं सब हमनवा[11]
गमज़दा[12] को कौन देता घर में पनाह

---

1. चंचल, 2. तंग, 3. वादा तोड़ना, 4. दुःख, 5. क्रूरता, 6. अनुभव, 7.तक़ाज़ा करना, 8. प्रमाण, 9. निर्धन, 10. अच्छे दिनों में, 11. सहमत, 12. पीड़ित,

ذہانت

تم پوچھتے ہو میں پریشان کیوں ہوں
تم جانتے ہو اس کا سبب
تم جانتے ہو اس کا انجام
تم یہ بھی جانتے ہو تم ہی ہو مُداوا اس کا
سب جان کر بھی بنتے ہو انجان
اور پوچھتے ہو میں پریشان کیوں ہوں

اگر میں سانس لیتا ہوں
دیکھتا ہوں سُنتا ہوں
محسوس کرتا ہوں وقت کی رفتار کو
تم سمجھتے ہو میں زندہ ہوں
تمھارا قیاس مجھے زندہ نہیں رکھ سکتا
زندہ رکھنے کے لیے ذہن چاہیے
تمھارے پاس ذہن ہے
مگر اپنی شخصیت کے لیے
اپنا راستہ بنانے کے لیے
میں تمھاری نظر میں کیسا ہوں
یہ میں جانتا ہوں
تمھارا تو محض قیاس ہے

ज़हानत[1]

तुम पूछते हो मैं परेशान क्यों हूँ
तुम जानते हो इस का सबब
तुम जानते हो इस का अंजाम
तुम यह भी जानते हो तुम ही हो मुदावा[2] इसका
सब जान कर भी बनते हो अनजान
और पूछते हो मैं परेशान क्यों हूँ

अगर मैं साँस लेता हूँ
देखता हूँ सुनता हूँ
महसूस करता हूँ वक़्त की रफ़्तार[3] को
तुम समझते हो मैं ज़िन्दा हूँ
तुम्हारा क़यास[4] मुझे ज़िंदा नहीं रख सकता
ज़िन्दा रखने के लिए ज़हन[5] चाहिए

तुम्हारे पास ज़हन है
मगर अपनी शख़सियत[6] के लिए
अपना रास्ता बनाने के लिए
मैं तुम्हारी नज़र में क्या हूँ
यह मैं जानता हूँ
तुम्हारा तो महिज़[7] क़यास है

---

1. समझबूझ, 2. इलाज, 3. चाल, 4. कल्पना, 5. बुद्धि, 6. व्यक्तित्व, 7. केवल,

تکلیف

تکلیف کا یکدم رُک جانا
بذاتِ خود ایک تکلیف ہے
ایسا محسوس ہوتا ہے
جیسے طوفان سے پیشتر عارضی سکون

یہی اکثر ہوتا ہے
کیوں کہ خوشی ناپائیدار ہے
جیسے اوک سے پانی پیتے وقت
مسافر کو تالاب میں نظر آئے
کسی حسین دوشیزہ کا عکس
جب مڑ کر دیکھے کچھ دکھائی نہ دے

اضطراب جُستجو میں پیاس اور بھڑک اُٹھے
یا کسی بھوکے کے منہ میں نوالا پڑنے سے پہلے
کوئی چیل جھپٹ کر چھین لے

اُس کے ہاتھ سے روٹی کا سوکھا ٹکڑا
یا کسی چپڑاسی کے گھر پہونچنے سے پہلے
کوئی جیب کاٹ کر اس کی تنخواہ مار لے

یا مُرادوں دعاؤں سے مانگی ہوئی اولاد
نا اہلی سے بوجھِ گراں بن جاتے
یا کنارے پر لگتے ہی کشتی
طوفان کی مہلک لپیٹ میں آجائے

तकलीफ़

तकलीफ़ का यकदम रूक जाना
बज़ात–ए–ख़ुद[1] एक तकलीफ़ है
ऐसा महसूस[2] होता है
जैसे तूफ़ान से पेश्तर[3] आर्ज़ी[4] सुकून[5]

यही अकसर होता है
क्योंकि ख़ुशी नापायदार[6] है
जैसे ओक से पानी पीते वक़्त
मुसाफ़िर को तालाब में नज़र आए
किसी हसीन दोशीज़ा[7] का अक्स[8]
जब मुड़ कर देखे कुछ दिखाई ना दे
इज़्तिराब–ए–जुस्तजू[9] में प्यास और भड़क उठे

या किसी भूखे के मुंह में नवाला पड़ने से पहले
कोई चील झपट कर छीन ले
उसके हाथ से रोटी का सूखा टुकड़ा
या किसी चपड़ासी के घर पहुंचने से पहले
कोई जेब काट कर उसकी तंख़ाह मार ले
या मुरादों दुआओं से मांगी हुई औलाद
नाअहली[10] से बोझ–ए–गिरां[11] बन जाए
या किनारे पर लगते ही किश्ती
तूफ़ान की मोहलिक[12] लपट में आ जाए .

---

1. अपने आप में, 2. अनुभव, 3. पहले, 4. अस्थाई, 5. स्थिरता, सन्नाटा, 6. अस्थिर, 7.कुमारी, 8. प्रतिबिंब, 9. व्याकुल तलाश, 10. अयोग्यता, 11. रो रो का कष्ट उठाना, 12. घातक,

تکلیف سایۂ زندگی ہے
کبھی سامنے کبھی پیچھے
کبھی طویل کبھی کوتاہ
مگر ہمیشہ ساتھ رہتی ہے
چولی دامن کی طرح

روزمرہ کوئی نہ کوئی سوئی چُبھتی رہے
تلوار کا گھاؤ بھی برداشت ہو جاتا ہے
اے انسان تکلیف کا احسان مند ہو
تکلیف کو ہر روز سلام کر
یہی تمھاری جوان مردی کا امتحان ہے

رُباعیات

اسی امید میں نہ چھوڑی گلی تیری
ہو نہ جاؤ کہیں مہربان ہمارے بعد
یقین نہیں آتا اپنی نا یقینی پر
شاید بھُولے سے آجائے ہماری یاد

بلاؤ نہ ہمیں آواز دے کر
سُن نہ لے دنیا قصہ ہمارا
کوئی تم سے پوچھے کون ہے وہ
کیسے بتائیں ہم نام تمھارا

तकलीफ़ साया–ए–ज़िंदगी है
कभी सामने कभी पीछे
कभी तवील[13] कभी कोताह[14]
मगर हमेशा साथ रहती है
चोली दामन की तरह

रोज़मरहा[15] कोई न कोई सूई चुभती रहे
तलवार का घाव भी बरदाश्त हो जाता है
ऐ इंसान तकलीफ़ का एहसानमंद[16] हो
तकलीफ़ को हर रोज़ सलाम करो
यही तुम्हारी जवानमरदी[17] का इम्तिहान है

रूबाइयात

इसी उमीद में न छोड़ी गली तेरी
हो न जाओ कहीं मेहरबान हमारे बाद
यक़ीन नहीं आता अपनी नायक़ीनी पर
शायद भूले से आ जाए हमारी याद

बुलाओ न हमें आवाज़ देकर
सुन न ले दुनिया किस्सा हमारा
कोई हम से पूछे कौन है वह
कैसे बताएगें हम नाम तुम्हारा

---

13. लम्बा, 14. छोटा, 15. प्रतिदिन, 16. आभारी, 17. वीरता,

واپسی

تم پھر سے نہ آؤ میری زندگی میں
تو کتنا ہی اچھا ہو گا
تمھاری موجودگی کا احساس
تمھارے الفاظ کی کڑواہٹ
دروغ گوئی کے الزامات
بدگمانی کے نشتر
کردار پر نکتہ چینی
اور تمھارا یہ وہم یہ یقین
زندہ نہیں رہ سکوں گا تمھارے بغیر
مر جاؤں گا سِسک سِسک کر
کوئی پوچھنے والا نہ ہو گا
حالتِ علالت میں
لڑ نہ سکوں گا اکیلا زمانے سے
بے بس بے سہارا ہو جاؤں گا
تمھاری لگائی ہوئی ضربیں مگر
نکل گئی ہیں میرے ذہن سے رفتہ رفتہ

اب میں اپنے جسم کا مالک ہوں
اپنے دماغ کا مالک ہوں
اپنے یقین کا مالک ہوں
آزاد ہوں تمھاری گرفت سے

ضرورت نہیں پڑتی کان بند کرنے کی

वापसी

तुम फिर से न आओ मेरी जिंदगी में
तो कितना ही अच्छा होगा
तुम्हारी मौजूदगी[1] का एहसास[2]
तुम्हारे अलफ़ाज़[3] की कड़वाहट
दरोग़ गोइ[4] के इल्ज़ामात[5]
बदगुमानी[6] के निश्तर[7]
किरदार[8] पर नुकताचीनी[9]
और तुम्हारा यह वहम[10] यह यकीन[11]
ज़िंदा नहीं रह सकूंगा तुम्हारे बग़ैर
कोई पूछने वाला न होगा
हालत–ए–अलालत[12] में
लड़ न सकूँगा अकेला ज़माने से
बेबस बेसहारा हो जाऊँगा
तुम्हारी लगाई हुई ज़रबें[13] मगर
निकल गई हैं मेरे ज़हन[14] से रफ़्ता[15] रफ़्ता

अब मैं अपने जिस्म का मालिक हूँ
अपने दिमाग़ का मालिक हूँ
अपने यक़ीन का मालिक हूँ
आज़ाद हूँ तुम्हारी गिरफ़्त[16] से
ज़रूरत नहीं पड़ती कान बंद करने की

1.उपस्थिति, 2.अनुभव, 3.शब्दों, 4.झूट बोलना, 5.आरोप, 6.बुरी धारणा, 7.आघात, 8.चरित्र, 9.आलोचना, 10.भ्रम, 11.विश्वास, 12.अस्वस्थ दशा, 13.चोटें, आरोप, 14.दिमाग़, 15.धीरे धीरे, 16.पकड़,

ضرورت نہیں پڑتی منہ کھولنے کی
ضرورت نہیں پڑتی دیکھنے کی
تمھارے آتشیں چہرے کو

کتنا ڈھل گیا ہوں میں اپنے آپ میں
جو پاؤں کبھی لڑکھڑاتے تھے
گھر کے اندر داخل ہوتے ہوئے
جو آنکھیں پریشان ہوتی تھیں
گھر کا ماحول دیکھ کر
جو دل مایوس ہوتا تھا
روز روز کے تناؤ سے
وہ بکھرے ہوئے جسمانی اجزا
سب آگئے ہیں اپنے اپنے مقام پر

اب جو تم آگئے
تو موت یقینی ہے
خدا کے لیے مت آؤ اب
یہ آخری التجا ہے تم سے

رُباعی

ہمیں تماشا بنا خوب تماشا کیا
پیسا اپنی جیب میں ہمیں چلتا کیا
نہیں کمی دنیا میں خود غرضوں کی
اپنا کام نکال دوسرے کو ٹلتا کیا

ज़रूरत नहीं पड़ती मुंह खोलने की
ज़रूरत नहीं पड़ती देखने की
तुम्हारे आतशीं[17] चेहरे को
कितना ढल गया हूँ मैं अपने आप में
जो पाँव कभी लड़खड़ाते थे
घर के अंदर दाख़िल होते हुए
जो आँखें परेशान होती थीं
घर का माहोल[18] देख कर
जो दिल मायूस[19] होता था
रोज़ रोज़ के तनाव[20] से
वे बिखरे हुए जिसमानी अजज़ा[21]
सब आ गए हैं अपने अपने मक़ाम[22] पर
अब जो तुम आ गए
तो मौत यकीनी है
ख़ुदा के लिए मत आओ अब
यही आख़िरी इल्तिजा[23] है तुम से

रूबाई

हमें तमाशा बना ख़ूब तमाशा किया
पैसा अपनी जेब में हमें चलता किया
नहीं कमी दुनिया में ख़ुदग़रज़ों की
अपना काम निकाल दूसरे को टलता कया

17. अग्निमय, 18. वातावरण, 19. उदास, 20. खिचाव, 21. अंग, 22. सही जगह, 23. प्रार्थना,

سرکاری ملازم

خدا بچائے سرکاری ملازموں سے
اوپر سے لے کر نیچے تک
سب ایک ہی تھالی کے چٹے بٹے
بذات خود ایک فرقہ ہیں

آپس میں لڑتے جھگڑتے ہیں
چُغل خوری بھی کرتے ہیں
گالی گلوچ سے بھی نہیں کتراتے
اور بڑے صاحب کی خوشامد کرنا تو واجب ہے

مگر باہر کا کوئی ٹانگ اڑائے
یک جا ہو جاتے ہیں
گیدڑوں کے جُھنڈ کی طرح
کبھی کبھی غرّاتے بھی ہیں

آسان کام کو مشکل بنانا
لوگوں کو ٹرخانا یا جھوٹی تسلی دینا
سرکاری قانون کی آڑ میں بے وقوف بنانا
ان کے بائیں ہاتھ کا کھیل ہے

اپنی مرضی سے دفتر آتے ہیں
اپنی مرضی سے جاتے ہیں
آدھا دن گپ شپ چائے پانی میں

सरकारी मुलाज़िम

खुदा बचाए सरकारी मुलाज़िमों से
ऊपर से ले कर नीचे तक
सब एक ही थाली के चट्टे बट्टे
बज़ात–ए–ख़ुद[1] एक फ़िर्क़ा[2] हैं

आपस में लड़ते झगड़ते हैं
चुग़लख़ोरी भी करते हैं
गालीगलोच से भी नहीं कतराते
और बड़े साहब की ख़ुशामद[3] करना तो वाजिब[4] है

मगर बाहर का कोई टाँग अड़ाए
यकजा[5] हो जाते हैं
गीदड़ों के झुंड की तरह
कभी कभी गुर्राते भी हैं
आसान काम को मुश्किल बनाना
लोगों को टरख़ाना या झूठी तसल्ली देना
सरकारी कानून की आड़ में बेवकूफ़ बनाना
इन के बाएँ हाथ का खेल है

अपनी मरज़ी से दफ़्तर आते हैं
अपनी मरज़ी से जाते हैं
आधा दिन गपशप चाए–पानी में

---

1. अपने आप में, 2. दल, 3. चापलूसी, 4. उचित, 5. एक हो जाते हैं,

باقی وقت فائلوں کو اُچھالنے میں
چھٹیوں کا تو بھنڈار ہے ان کے پاس
علالت کی چھٹی اتفاقی چھٹی
پوری استحقاقی آدھی استحقاقی
بلا اجازت چھٹی کی تو بات ہی کیا

رشوت لینے میں ماہر
نقدی ہو یا تحفہ
شبِ بزم ہو یا شراب کی بوتل
جو مل جائے قبول ہے

دفتر کی ہر چیز کو نجی جائیداد سمجھتے ہیں
چاہے وہ قلم کاغذ ہو یا چپڑاسی
اگر باہر کا دورہ لگ جائے
دورے کے بھتے میں بھی ہاتھ مار لیتے ہیں

کہو اوپر کی کمائی ناجائز ہے
جھٹ سے کہیں گے تنخواہ سے کیا بنتا ہے
گھر کا گزارہ مشکل سے ہوتا ہے
اوپر سے بچوں کی پڑھائی لکھائی شادی بیاہ

ہڑتال کے لیے کمر کسے رہتے ہیں
جلوس نکالنے نعرے لگانے میں
اتنے ہی ماہر ہیں جتنا رشوت لینے میں
مستقل ملازم کو تو وزیرِ اعظم بھی نہیں ہلا سکتا

बाकी वक़्त फ़ाइलों को उछालने में

छुट्टियों का तो भंडार है इन के पास
अलालत[6] की छुट्टी इत्तिफ़ाक़ी[7] छुट्टी
पूरी इसतेहक़ाक़ी[8] आधी इसतेहक़ाक़ी[9]
बिला इज़ाज़त छुट्टी की तो बात ही क्या

रिश्वत लेने में माहिर[10]
नक़दी हो य तोहफ़ा[11]
शब–ए–बज़्म[12] हो या शराब की बोतल
जो मिल जाए क़बूल[13] है

दफ़्तर की हर चीज़ को निजी जायदाद[14] समझते हैं
चाहे वह क़लम क़ाग़ज़ हो या चपड़ासी
अगर बाहर का दौरा लग जाए
दौरे के भत्ते में भी हाथ मार लेते हैं

कहो ऊपर की कमाई नाजाइज़ है
झट से कहेंगे तंखाह से क्या बनता है
घर का गुज़ारा मुश्किल से होता है
ऊपर से बच्चों की पढ़ाई लिखाई शादी बयाह

हड़ताल के लिए कमर कसे रहते हैं
जलूस निकालने नारे लगाने में
इतने ही माहिर हैं जितना रिश्वत लेने में
मुस्तक़िल[15] मुलाज़िम को तो वज़ीर–ए–आज़म[16] भी नहीं हिला सकता

---

6. बीमारी, 7. आकस्मिक, 8. पूरे वेतन पर अर्जित छुट्टी, 9. आधे वेतन पर अर्जित छुट्टी, 10. निपुण, 11. उपहार, 12. रात की मजलिस, 13. स्वीकार, 14. अपनी संपत्ति, 15. स्थायी, परमेनैंट, 16. प्रधान मंत्री,

کسی کا کام کریں یا نہ کریں
بگاڑنے میں دیر نہیں لگاتے
تبھی تو لوگ ان سے ڈرتے ہیں
چاہے دل میں ہزار گالیاں دیتے ہیں

خُدا بچائے ان سرکاری ملازموں سے
تعداد میں بے شمار
جہاں جاؤ موجود
خُدا بھی کرے تو کیا کرے

رُباعیات

دیکھ کر ہمیں نہ پھیرا کرو رُخ اپنا
ڈر لگتا ہے نہ آجائے گردن میں موچ
چلو دھیان سے سڑک کے بیچوں بیچ
مر جائیں گے ہم گر آگئی آپ کو کھروچ

جو سہہ نہ سکا ضربِ عشق چلا گیا
جو رہ گیا وقت کے سانچے میں ڈھل گیا
ہم نے تو چھوڑ دیا تھا اُن کے گھر کا راستہ
چلتے چلتے وہ ظالم راہ میں مل گیا

किसी का काम करें या न करें
बिगाड़ने में देर नहीं लगाते
तभी तो लोग इन से डरते हैं
चाहे दिल में हज़ार गालियाँ देते हैं

ख़ुदा बचाए इन सरकारी मुलाज़िमों से
तादाद में बेशुमार[17]
जहाँ जाओ मौजूद
ख़ुदा भी करे तो क्या करे

रूबाईयात

देख कर हमें न फेरा करो रूख़ा[18] अपना
डर लगता है न आ जाए गर्दन में मोच
चलो ध्यान से सड़क के बीचों बीच
मर जाएँगे हम गर आगई आपको खरोच

जो सह ना सका ज़र्ब–ए–इश्क़[19] चला गया
जो रह गया वक़्त के सांचे में ढल गया
हमने तो छोड़ दिया था उनके घर का रास्ता
चलते चलते वह ज़ालिम राह में मिल गया

---

17. अनगिनत, 18. मुख, 19. प्रेम की चोट,

اندر کا بھکاری

ہر شخص کے اندر
کہیں نہ کہیں
کِسی نہ کِسی کونے میں
دل و دماغ کے باہمی گٹھ جوڑ سے
ایک بھکاری بسا ہوا ہے
جس کا کام ہے مانگنا
کبھی خدا سے کبھی خاکی سے
پیٹ کتنا کیوں نہ بھرا ہو
آنکھیں ہمیشہ بھوکی رہتی ہیں
آج کی نسبت کل کی زیادہ فکر کرتا ہے
کل کی نسبت پرسوں کی
پرسوں کی نسبت آنے والے دنوں کی
جن کے وہ دیکھتا ہے حسین خواب
موجودہ اسباب سے مطمئن نہیں
ہر صبح شام خدا کے حضور میں سجدہ کرتا ہے
کبھی دولت کے لیے
کبھی صحت کے لیے
کبھی مخالف کو پست کرنے کی قوت مانگتا ہے
کبھی اُبھرنے والے کے تنزل کی بددعا مانگتا ہے

अंदर का भिकारी

हर शख़्स के अंदर

कहीं न कहीं

किसी न किसी कोने में

दिल–ओ–दिमाग़ के बाहमी [1] गठज़ोड़ से

एक भिकारी बसा हुआ है

जिस का काम है मांगना

कभी ख़ुदा से कभी ख़ाकी [2] से

पेट कितना क्यों न भरा हो

आँखें हमेशा भूकी रहती हैं

आज की निस्बत [3] कल की ज़्यादा फ़िकर करता है

कल की निस्बत परसों की

परसों की निस्बत आने वाले दिनों की

जिन के वह देखता है हसीन [4] ख़ाब

मौजूदा [5] अस्बाब [6] से मुतमइन [7] नहीं

हर सुबह शाम ख़ुदा के हुजूर में सज्दा [8] करता है

कभी दौलत के लिए

कभी सेहतयाबी [9] के लिए

कभी मुख़ालिफ़ [10] को पस्त [11] करने की कुव्वत [12] मांगता है

कभी उभरने वाले के तनज़्ज़ूल [13] की बददुआ मांगता है

1.आपसी, 2.मिट्टी का बना (इंसान), 3.अपेक्षा, 4.सुन्दर, 5.वर्तमान, 6.हालात, 7.सं
8.माथा टेकना, 9.स्वास्थय प्राप्ति, 10.विरोधी, 11.नीचा दिखाना, 12.बल, 13.पतन,

نہ جانے کیا کیا مانگتا ہے
بس مانگتا ہی رہتا ہے
کبھی اندر دل ہی دل میں
کبھی باہر زور زور سے پکار کر

ساتھ ساتھ ہم جنس کے آگے بھی ہاتھ پھیلاتا ہے
ملازمت میں صاحب سے ترقی کے لیے
نوکری میں آقا سے تنخواہ میں اضافہ کے لیے
کاروبار میں وزیر سے سرکاری پروانے کے لیے
ٹھیکے داری میں سرکاری حاکم سے بھتے کے لیے

سیاست دان ٹکٹ کے لیے التجا مند ہے
رائے دہندہ اپنی رائے کی رقم مانگتا ہے
ملزم باعزت رہائی کی گزارش کرتا ہے
شکست خوردہ جان کی امان کے لیے گڑگڑاتا ہے
بے روزگار نوکری کے لیے منت سماجت کرتا ہے
بھوکا ننگا روٹی کپڑے کے لیے چلاتا ہے
دانش ور قدر افزائی کا خواہش مند ہے
جاہل قوتِ بربریت کا طلب گار ہے

جب گلے میں پھندا پڑا ہو
زندگی کی بھیک مانگتا ہے

न जाने क्या क्या मांगता है
बस मांगता ही रहता है
कभी अंदर दिल ही दिल में
कभी बाहर ज़ोर ज़ोर से पुकार कर

साथ साथ हमजिंस[14] के आगे भी हाथ फैलाता है
मुलाज़मत में साहब से तरक़्क़ी के लिए
नौकरी में आक़ा[15] से तंख़ा में इज़ाफ़ा[16] के लिए
कारोबार में वज़ीर से सरकारी परवाने के लिए
ठेकेदारी में सरकारी हाकिम से भत्ते के लिए

सियासतदान[17] टिकट के लिए इल्तिजामंद[18] है
राएदिहंदा[19] अपनी राए की रक़म[20] मांगता है
मुलज़िम बाइज़्ज़त[21] रिहाई की गुज़ारिश[22] करता है
शिकस्त[23] ख़ुर्दा जान की अमान के लिए गिड़गिड़ाता[24] है
बेरोज़गार नौकरी के लिए मिन्नत समाजत करता है
भूका नंगा रोटी कपड़े के लिए चिल्लाता है
दानिश्वर[25] क़द्र अफ़ज़ाई[26] का ख़ाहिशमंद है
जाहिल[27] कुव्वत–ए–बरबरियत[28] का तलबगार[29] है

जब गले में फंदा पड़ा हो
ज़िंदगी की भीक मांगता है

---

14. अपने जैसा (मानव), 15. मालिक, 16. वृद्धि, 17. राजनीतिज्ञ, 18. निवेदक, 19. मत दाता, 20. कीमत, 21. मान के साथ, 22. प्रार्थना, 23.पराजित, 24. प्रार्थना करना, 25. बुद्धिमान, 26. मानसम्मान, 27. मूर्ख, 28. क्रूर बल, 29. इच्छुक,

جب زندگی آزار ہو جائے
موت کی بھیک مانگتا ہے
ہے کوئی ایسا بشر
بھک منگا نہ ہو

مانگنے والا غریب ہو
مانگنے کو تشبیہ دی جاتی ہے خیرات سے
امیر ہو اُسے حق کی وصولی کہا جاتا ہے
ہر آدمی مانگتا ہے کچھ نہ کچھ
چاہے وہ اس کا مستحق ہو نہ ہو
پھر مفت میں مل جائے تو کیا بُرا ہے

رُباعیات

اپنی گلی میں ہوتا ہر کُتّا شیر
اپنے باغیچے کے کھٹے لگیں میٹھے بیر
غیروں کے بچے نکمّے آوارہ گرد
اپنا چھٹانک کا مگر لگے ہے سیر

میں وہ پتنگا نہیں جو جل جاؤں گا
تمھارے جھوٹے وعدوں سے ٹل جاؤں گا
بہت انتظار کیا اب نہ کروں گا اور
پتھر ہوں موم نہیں جو پگھل جاؤں گا

जब ज़िंदगी आज़ार[30] हो जाए

मौत की भीक मांगता है

है कोई ऐसा बशर[31]

भिक मंगा न हो

मांगने वाला ग़रीब हो

मांगने को तश्बीह[32] दी जाती है ख़ैरात से

अमीर हो उसे हक़ की वसूली कहा जाता है

हर आदमी मांगता है कुछ न कुछ

चाहे वह इसका मुस्तहक़[33] हो न हो

फिर मुफ़्त में मिल जाए तो क्या बुरा है

रूबाइयात

अपनी गली में होता हर कुत्ता शेर

अपने बाग़ीचे के खट्टे लगें मीठे बेर

ग़ैरों के बच्चे निकम्मे आवारागर्द

अपना छटांक का मगर लगे है सेर

मैं वह पतंगा नहीं जो जल जाऊँगा

तुम्हारे झूठे वादों से टल जाऊँगा

बहुत इंतज़ार किया अब न करूँगा और

पत्थर हूँ मोम नहीं जो पिघल जाऊँगा

---

30. रोग, 31. आदमी, 32. तुलना, 33. योग्य,

حسرت

اے خدا کب بدلے گا میرے ہاتھ کی لکیر
مجھے بھی اوروں کی طرح بنا دے امیر
ناجانے کتنی خواہشیں میرے دل میں ہیں
پہلی خواہش حکومت کی چنوا دے وزیر
اگر ابھی جگہ خالی نہیں وزارت میں
عارضی طور پر بھجوا دے ہند کا سفیر
جانتا ہوں تو کہے گا انپڑھ کا کیا کام
بے کار رہنے سے اچھا ہے لگوادے مشیر
تیری سفارش سے بڑھ کر نہیں کوئی سفارش
تیری مہربانی کے بغیر کیا کرسکے بندہ حقیر
مُلا گِری سے بڑھ کر نہیں کوئی مشغلہ
تیرا واعظ بنوں گا بنادے مجھے پیر
تو نے کچھ نا کیا مجھے ہی کچھ کرنا پڑے گا
لے کر ہاتھ میں کشکول بن جاؤں گا فقیر

رُباعی

معاف کرنا فرشتۂ اجل یہاں کچھ نہ پاؤ گے
ہم تو مر چکے عشق میں خالی ہاتھ جاؤ گے
کیا لوگے ہم سے حساب ہمارے افعال کا
المیہ داستان ہماری سن کر آنسو بہاؤ گے

हसरत

ऐ ख़ुदा कब बदलेगा मेरे हाथ की लकीर
मुझे भी औरों की तरह बनादे अमीर
न जाने कितनी ख़ाहिशें मेरे दिल में हैं
पहली ख़ाहिश हकूमत की चुनवा दे वज़ीर
अगर अभी जगह ख़ाली नहीं विज़ारत में
आरिज़ी[1] तौर पर भिजवा दे हिंद का सफ़ीर[2]
जानता हूँ तू कहेगा अनपढ़ का क्या काम
बेकार रहने से अच्छा है लगवा दे मुशीर[3]
तेरी सिफ़ारिश से बढ़ कर नहीं कोई सिफ़ारिश
तेरी मेहरबानी के बग़ैर क्या कर सके बंदा हक़ीर[4]
मुल्लागिरी[5] से बढ़ कर नहीं कोई मश्ग़ला[6]
तेरा वाईज़[7] बनूँगा बनादे मुझे पीर
तू ने कुछ न किया मुझे ही कुछ करना पड़ेगा
ले कर हाथ में कश्कोल[8] बन जाऊंगा फ़क़ीर

रूबाई

माफ़ करना फ़रिशता–ए–अजल[9] यहां कुछ न पाओगे
हम तो मर चुके इश्क़ में खाली हाथ जाओगे
क्या लोगे हम से हिसाब हमारे अफ़ाल[10] का
अलमीय[11] दास्तान हमारी सुनकर आँसू बहाओगे

---

1. अस्थायी, 2. राजदूत, 3. सलाहाकार, परामर्शदाता, 4. तुच्छ, 5. पंडिताई, 6. शुग्ल, व्यापार, 7. प्रवाचक, 8. भिक्षापात्र, 9. मौत का देवता, 10. कर्म, 11. दुखांत,

مسودہ دیوان

کہاں گیا ہمارے ایک سو اکیاون صفحے کا دیوان
مُدیر نے بے رخی سے کہا نہیں چھپنے کا کوئی امکان
پوچھا وجہ کہنے لگے کمیٹی کی ہے یہی متفق رائے
ہم نے کہا واپس کردو مسودہ ہے یہ ہماری شے
نا آیا جب کوئی جواب جا پہنچے ہم مدیر کے دفتر
بے تُکا جواب ملا عملہ میں سے چھٹی پر ہیں میاں اختر
ناجانے کتنے چکر لگائے ہر بار دیا ہمیں ٹال
ایک دن کہنے لگے مِل جائے گا نا لائیے دل پر ملال
مایوس لوٹ رہے تھے گھر کو ہم کباڑی نے لگائی آواز
جناب مرحوم صاحب آپ کی تحریر ہمیں لگی ممتاز
پہلے تو غصہ آیا محروم سے بنا دیا ہمیں مرحوم
پھر خیال آیا ہوگا اس کی بات کا کوئی مفہوم
ہمیں سوچ میں ڈوبا دیکھ کر کہنے لگا وہ کباڑی
آپ کا دیوان آج ہی بیچ گیا کوئی اناڑی
کم بخت نے نڈر ہو کر کہا کھول لیجیے کوئی دوکان
پُڑیاں بنانے کے کام آئیں گے اوراقِ دیوان

मसौदा दीवान

कहाँ गया हमारा एकसौ इक्यावन सफ़हे का दीवान[1]
मुदीर[2] ने बेरूख़ी[3] से कहा नहीं छपने का कोई इम्कान[4]
पूछी वजह कहने लगे कमेटी की है यही मुत्तफ़िक़[5] राए
हम ने कहा वापिस कर दो मसौदा है यह हमारी शै
न आया जब कोई जवाब जा पहुँचे हम मुदीर के दफ़तर
बेतुका[6] जवाब मिला अमला[7] में से छुट्टी पर हैं मियाँ अख़तर
ना जाने कितने चक्कर लगाए हर बार दिया हमें टाल
एक दिन कहने लगे मिल जाएगा ना लाइएगा दिल पर मलाल[8]
मायूस लौट रहे थे घर को हम कबाड़ी ने लगाई आवाज़
जनाब मर्हूम[9] साहब आपकी तहरीर[10] हमें लगी मुम्ताज़[11]
पहले तो गुस्सा आया महरूम[12] से बना दिया हमें मर्हूम
फिर ख़याल आया होगा इसकी बात का कोई मफ़हूम[13]
हमें सोच में डूबा देखकर कहने लगा वह कबाड़ी
आप का दीवान आज ही बेच गया कोई अनाड़ी
कमबख़्त[14] ने निडर[15] हो कर कहा खोल लीजिए कोई दुकान
पुड़ियाँ बनाने के काम आएँगे औराक़–ए–दीवान[16]

---

1. ग़ज़लों की पुस्तक का पांडुलेख, 2. संपादक, 3. अवहेलना, 4. संभावना, 5.सर्वसम्मत, 6. अनुचित, बेजोड़, 7. कर्मचारी वर्ग, 8. रंज, दुःख, 9. "स्वर्गीय" 10.लिखावट, 11. प्रिय, 12. वंचित (लेखक का उपनाम), 13. अर्थ, 14. दुष्ट, 15.निभर्य, 16. दीवान के पृष्ट,

پیغمبر

سُنا ہے آسمان سے کوئی پیغمبر آنے والا ہے
ہم سب کو از سر نو آدمی بنانے والا ہے
چھوڑو سب کام کرو مل کر عبادت اُس کی
بے روز گار کو روٹی ننگے کو کپڑا پہنانے والا ہے
تعلیم یافتہ جاہل میں ہوتا ہر روز تصادم
وہ نبی ہمیں درسِ اخلاق سکھانے والا ہے
کیوں اُٹھاتے ہو کوڑا کرکٹ لگادو ڈھیر
وہ بندہِ خدا تمھاری غلیظگی اُٹھانے والا ہے
جی بھر کر کرلو گناہ ہے یہی وقت سنہری
وہ فرشتہِ پاک نئی روح دِلانے والا ہے

رُباعیات

اگر تو واقعی ہی ہے جلوہ نما کیوں نہیں ہوتا
ہم تجھ پر فدا ہیں تو ہم پر فدا کیوں نہیں ہوتا
بینائیِ چشم لالیِ لب چلے گئے سب چھوڑ کر
دُنیائے بے ثبات سے دل جُدا کیوں نہیں ہوتا

ایک دیا بجھنے سے اندھیرا نہیں ہوتا
ہزاروں دیے جلنے سے سویرا نہیں ہوتا
نظامِ قدرت کے ہیں کچھ اپنے اصول
محل بنانے سے دائمی بسیرا نہیں ہوتا

पैग़म्बर

सुना है आसमान से कोई पैग़म्बर आने वाला है
हम सब को अज़सरे[1] नौ आदमी बनाने वाला है
छोड़ो सब काम करो मिल कर इबादत[2] उस की
बेरोज़गार को रोटी नंगे को कपड़ा पहनाने वाला है
तालीमयाफ़ता[3] जाहिल[4] में होता हर रोज़ तसादुम[5]
वह नबी[6] हमें दर्स-ए-इख़्लाक़[7] सिखाने वाला है
क्यों उठाते हो कूड़ा करकट लगा दो ढेर
वह बंदा-ए-ख़ुदा तुम्हारी ग़लीज़गी[8] उठाने वाला है
जी भर कर करलो गुनाह है यही वक्त सुनहरी
वह फ़िरिश्ता-ए-पाक[9] नई रूह[10] दिलाने वाला है

रूबाइयात

अगर तू वाक़ई[11] ही है जलवा[12] नुमा क्यों नहीं होता
हम तुझ पर फ़िदा[13] हैं तू हम पर फ़िदा क्यों नहीं होता
बीनाई-ए-चश्म[14], लाली-ए-लब[15] चले गए सब छोड़ कर
दुनिया बेसबात[16] से दिल जुदा क्यों नहीं होता

एक दिया बुझने से अंधेरा नहीं होता
हज़ारों दिए जलने से सवेरा नहीं होता
निज़ाम-ए-कुदरत[17] के हैं कुछ अपने असूल
महल बनाने से दाइमी[18] बसेरा नहीं होता

---

1. नए सिरे से, 2. आराधना, 3. शिक्षित, 4. अनपढ़, 5. परस्पर टकराव, झगड़ा, 6. अवतार, 7. सदाचार का पाठ, 8. गंदगी, 9. पवित्र देवता, 10. आत्मा, 11.सचमुच, यथार्थ, 12.प्रकट, 13.मोहित, 1 4.आँखों की रौशनी, 1 5.अधरों की लाली, 16.नशवर संसार, 17.प्राकृतिक पद्धतियां, 18.सदा के लिए,

عبادت

جو گرا کر مسجد مندر سجایا ہے
کافر کو موت کے گھاٹ سُلایا ہے
قوتِ افراطِ زر سے عیسائی بنایا ہے
اپنے دھرم کو سب سے خالص بتایا ہے
یہ دین نہیں دین سے عداوت ہے
مالک دو جہاں سے کُھلی بغاوت ہے

پانچ وقت نماز پڑھنے سے کیا ہوتا ہے
شوالے میں گھنٹے بجانے سے کیا ہوتا ہے
گرجا میں دعا گو ہونے سے کیا ہوتا ہے
گُردوارہ میں گُربانی سنانے سے کیا ہوتا ہے
دل میں ہو نفرت عبادت جہالت ہے
تعصب کس کتابِ پاک کی طاعت ہے

دھرم کے نام پر لوٹ مچائی ہے
خدا کے نام پر شمشیر چلائی ہے
گُرو کے نام پر دہشت پھیلائی ہے
عیسیٰ کے نام پر آگ لگائی ہے
کون کہتا ہے یہ انسانی محبت ہے
حقیقت میں آہنگِ منافرت ہے

इबादत

जो गिरा कर मस्जिद मंदिर सजाया है
काफ़िर[1] को मौत के घाट सुलाया है
कूअत-ए-अफ़रात-ए-ज़र[2] से ईसाई बनाया है
अपने धर्म को सबसे ख़ालिस बताया है
यह दीन नहीं दीन[3] से अदावत[4] है
मालिक-ए-दोजहाँ से खुली बग़ावत[5] है
पाँच वक्त नमाज़ पढ़ने से क्या होता है
शिवाले में घंटियाँ बजाने से क्या होता है
गिरजे में दुआगो[6] होने से क्या होता है
गुरद्वारे में गुरबानी सुनाने से क्या होता है
दिल में हो नफ़रत इबादत जहालत[7] है
ताअसुब[8] किस किताब-ए-पाक की ताअत[9] है
धर्म के नाम पर लूट मचाई है
ख़ुदा के नाम पर शमशीर[10] चलाई है
गुरू के नाम पर दहशत[11] फैलाई है
ईसा के नाम पर आग लगाई है
कौन कहता है यह इनसानी मुहब्बत है
हक़ीक़त में आहंग-ए-मनाफ़रत[12] है

---

1. ख़ुदा को न मानने वाला, 2. धन के बलबूते पर, 3. धर्म, 4. वैर, 5. विद्रोह, 6.प्रार्थना करना, 7. अज्ञानता, 8. कट्टर पन 9. पूजा, आराधना, 10. तलवार, 11.आतंक, 12. आपसी धृणा की आवाज़,

فقیر

سڑک پر کھڑا میں خدا بیچتا ہوں
ہر راہ گیر کو دعا بیچتا ہوں
اللہ کے نام پر دے دو ایک پیسا
مراد پوری ہونے کی دوا بیچتا ہوں

کبھی بیٹھ جاتا ہوں دھونی رما کر
کبھی گھومتا گلے میں سانپ لٹکا کر
کبھی باجہ بجاتا کبھی گیت گاتا
کبھی چِلاتا ٹانگ پر پٹی لگا کر

نابینا بھی ہوں بہرا بھی ہوں میں
رنگ بدلتا ہوا چہرہ بھی ہوں میں
نہ ہے کوئی میرا نہ میں کسی کا
چراغ تلے کا اندھیرا ہوں میں

سب کو کہتا ہوں سب کا بھلا
جو دے بھلا جو نہ دے بھی بھلا
اپنے لیے نہیں مانگتا میں دُعا
جو ہوتا خدا میں بھی کرتا گِلہ

फ़क़ीर

सड़क पर खड़ा मैं ख़ुदा बेचता हूँ
हर राहगीर को दुआ बेचता हूँ
अल्लाह के नाम पर देदो एक पैसा
मुराद[1] पूरी होने की दवा बेचता हूँ

कभी बैठ जाता हूँ धूनी रमा कर
कभी घूमता गले में सांप लटका कर
कभी बाजा बजाता कभी गीत गाता
कभी चिल्लाता टाँग पर पट्टी लगा कर

नाबीना[2] भी हूँ बहरा भी हूँ मैं
रंग बदलता हुआ चेहरा भी हूँ मैं
न है कोई मेरा न मैं किसी का
चिराग़ तले का अंधेरा हूँ मैं

सब को कहता हूँ सब का भला
जो दे भला जो न दे भी भला
अपने लिए नहीं मांगता मैं दुआ
जो होता ख़ुदा मैं भी करता गिलाह

---

1. इच्छा, 2. अंधा,

کُھلی چُٹھی

تماشا ہے تو تماش بین ہوں گے
قانون نہیں جُرم سنگین ہوں گے
جو نہیں روک تھام ملاوٹ پر
مرچ مصحالے سب رنگین ہوں گے
جب اُڑیں گیں تتلیاں ہوا میں
پکڑنے والے کئی شوقین ہوں گے
جہاں ہوں گے رقصِ عریانی
حاضرین بار بار آفرین ہوں گے
گر نہیں پہچان کھوٹے کھرے کی
بھکانے والے گُربہ مسکین ہوں گے

رُباعیات

تم بھی آؤ کبھی انجمنِ ملحدوں میں
جنت پنہاں نہیں تسبیح مالاؤں میں
نا کوئی ازان نا بجتی ہیں گھنٹیاں
دریا بٹتا نہیں ہے ناخُداؤں میں

قدرت نے بخشے نظارے دل بہلانے کے لیے
خوفِ قضا باندھ دیا گرہ میں ڈرانے کے لیے
جس کو دل دیا دل سے اُسی نے دل توڑ دیا
کیسا کھیل بنایا عشقِ مجازی رولانے کے لیے

खुली छुट्टी

तमाशा है तो तमाशबीन होंगे
क़ानून नहीं जुर्म संगीन[1] होंगे
जो नहीं रोक थाम मिलावट पर
मिर्च मसाले सब रंगीन होंगे
जब उड़ेंगी तितलियाँ हवा में
पकड़ने वाले कई शौकीन होंगे
जहाँ होगें रक़्स–ए–उर्यानी[2]
हाज़रीन[3] बार बार आफ़रीन[4] होंगें
गर नहीं पहचान खोटे खरे की
बहकाने वाले गुर्बा मसकीन[5] होंगे

रूबाइयात

तुम भी आओ कभी अंजुमन–ए–मुल्हिदों[6] में
जन्नत[7] पिनहा[8] नहीं तस्बीह[9] मालाओं में
न कोई अज़ान न बजती हैं घंटियाँ
दरिया बटता नहीं है नाख़ुदाओं[10] में

कुदरत[11] ने बख़्शे नज़ारे दिल बहलाने के लिए
ख़ौफ़–ए–कज़ा[12] बांध दिया गिराह[13] में डराने के लिए
जिस को दिल दिया दिल से उसी ने दिल तोड़ दिया
कैसा खेल बनाया इश्क़–ए–मजाज़ी[14] रूलाने के लिए

---

1. प्रचंड, भारी, 2. नंगे नाच, 3. उपस्थितजन, 4. क्या ख़ूब, वाह वाह, 5. व्यक्ति जो देखने में सीधा परन्तू अंदर से चालाक हो, 6. नास्तिकों की मंडली, 7. स्वर्ग, 8.गुप्त, 9. मुंसलमानों की जपमाला, 10. मल्लाहों, 11. प्रकृति, 12. मौत का डर, 13. पल्लू, 14.भौतिक प्रेम,

دُعا

اے خدا تو جہاں بھی ہے کر قبول سلام میرا
تو ہی میری مسجد ہے تو ہی ہے امام میرا
کہنے کو بہت مگر مختصر ہی کہوں گا
گر آج تجھے فرصت نہیں کل آجاؤں گا
کوئی جلدی نہیں مجھے اس جہاں سے جانے کی
نہ ہی تھی کوئی جلدی مجھے یہاں آنے کی
بلندیِ عرش سے پھینکا گیا میں زمین پر
آ گِرا منحوس شیطان کی جبین پر
ایک لمبی چیخ بھر کر ہوگیا گُم سُم
تقدیر بولی بیٹا اب کہاں جاؤ گے تم
پینے کے لیے آنسو کھانے کے لیے غم
رہنے کے لیے کوچہِ فکر اوڑھنے کو زخم
کیا مانگوں تجھ سے اتنا کچھ تو نے دیا
جتنی دیر بھی جیا تیری رحمت سے جیا
بس ایک دعا ہے میری کر قبول تو
معاف کر بچہ سمجھ کے میری ہر بھول تو
بہت لڑا ہوں زمانے سے اور نہ لڑوں میں
مرنے سے پہلے بستر مرگ پر نہ پڑوں میں

दुआ

ऐ ख़ुदा तू जहाँ भी है कर क़बूल[1] सलाम मेरा
तू ही मेरी मस्जिद है तू ही है इमाम[2] मेरा
कहने को बहुत मगर मुख़्तसर[3] ही कहूँगा
गर आज तुझे फुर्सत नहीं कल आ जाऊँगा
कोई जल्दी नहीं मुझे इस जहाँ से जाने की
न ही थी कोई जल्दी मुझे यहाँ आने की
बुलन्दी–ए–अर्श[4] से फ़ैंका गया मैं ज़मीन पर
आ गिरा मनहूस[5] शैतान[6] की जबीन[7] पर
एक लम्बी चीख़ भर कर हो गया गुम सुम[8]
तक़दीर बोली बेटा अब कहाँ जाओगे तुम
पीने के लिए आँसू खाने के लिए ग़म[9]
रहने को कूचा–ए–फ़िकर[10] ओढ़ने को ज़ख़्म
क्या माँगूँ तुझ से इतना कुछ तू ने दिया
जितनी देर जिया तेरी रहमत[11] से जिया
बस एक दुआ है मेरी कर क़बूल तू
माफ़ कर बच्चा समझ के मेरी हर भूल तू
बहुत लड़ा हूँ ज़माने से और न लड़ूँ मैं
मरने से पहले बिस्तर–ए–मर्ग[12] पर न पड़ूँ मैं

---

1. स्वीकार, 2. अग्रणय, 3. संक्षिप्त, 4. आकाश की ऊँचाई, 5. अमंगल, 6.पिशाच, 7. पेशानी, माथा, 8. मूक, 9. दुःख, 10. आशांक से भरी गली, 11. कृपा, दया, 12.मृत्यु की शय्या,

حکمرانِ ہند

آوازِ خلق سنو اے حکمرانِ ہند
چھوڑو یہ قصے باہمی عداوت کے
اُترو میدان میں سنبھالو بے کسوں کو
مٹاؤ کاغذی واعدے سخاوت کے
بات خالی تشدد کی نہیں ہے عظمت کی
ایسا نہ ہو لہرا جائیں پرچم بغاوت کے
ثمرِ آزادی نہیں مخصوص تمھارے لیے
بھیجو پیغام نیک دلی کی دعوت کے
ہوش میں آو پہچانو اپنے وجود کو
نہ بانٹو کڑوے لڈو کہہ کر حلاوت کے

رُباعیات

آزادی ہے پیدائشی حق میرا
حُب الوطنی ہے سبق میرا
جس حال میں وہ رکھے خوش ہوں
نبھانا فرض اپنا ہے نسق میرا

جو بولے سچ ہے وہ اب زبان کہاں
مل جائے جہاں پناہ ہے وہ مکان کہاں
جنھوں نے دی تھی ملک کے لیے قربانی
بھول گئے اُنھیں ہم ان کا نشان کہاں

हुकमरान–ए–हिन्द[1]

आवाज़–ए–ख़ल्क़[2] सुनो ऐ हुकमरान–ए–हिन्द
छोड़ो ये क़िस्से बाहमी[3] अदावत[4] के
उतरो मैदान में संभालो बेकसों[5] को
मिटाओ काग़ज़ी वादे सख़ावत[6] के
बात ख़ाली तशद्दुद[7] की नहीं है अज़मत[8] की
ऐसा न हो लहरा जाएँ परचम[9] बग़ावत के
समर–ए–आज़ादी[10] नहीं मख़सूस[11] तुम्हारे लिए
भेजो पैग़ाम[12] नेकदिली[13] की दावत के
होश में आओ पहचानो अपने वजूद[14] को
न बांटो कड़वे लडडू कह कर हलावत[15] के

रूबाइयात

अज़ादी है पैदाइशी[16] हक़ मेरा
हुब अलवतनी[17] है सबक़ मेरा
जिस हाल में वह रखो ख़ुश हूँ
निभाना फ़र्ज़ अपना है नसक़[18] मेरा

जो बोले सच है वह अब ज़ुबान कहाँ
मिल जाए जहाँ पनाह है वह मकान कहाँ
जिन्हों ने दी थी मुल्क के लिए क़ुरबानी
भूल गए उन्हें हम उनका निशान कहाँ

---

1. भारत के शासको, 2. जनसाधारण की आवाज़, 3. आपसी, 4.शत्रुता, 5.निःसहाय व्यक्तियों, 6. उदारता, 7. अत्याचार, 8. सम्मान, 9. ध्वज, 10. आज़ादी का फल, 11. विशेष कर, 12. संदेश, 13. सच्चाई, 14. अस्तित्व, 15. मिठास, 16.जन्म अधिकार, 17. देश प्रेम, 18. नियम,

نظم

جن آنکھوں نے قدرت کے حسین نظارے دیکھے
اُن ہی آنکھوں نے نفرت کے سُلگتے انگارے دیکھے
جن آنکھوں نے شہیدانِ وطن کو کٹتے دیکھا
اُن ہی آنکھوں نے آزادی ملک کو بٹتے دیکھا

بہت دیکھا ہے اب اور دیکھا نہیں جاتا
اے میرے مالک اٹھا لے اس جہاں سے مجھے

جن آنکھوں نے محفلوں میں جام چھلکتے دیکھے
اُن ہی آنکھوں نے بھوک سے بچے بلکتے دیکھے
جن آنکھوں نے ماں باپ کا بھرپور پیار دیکھا
اُن ہی آنکھوں نے گھر میں بدگمانی کا غبار دیکھا

بہت دیکھا ہے اب اور دیکھا نہیں جاتا
اے میرے مالک لے جا دور اس مکاں سے مجھے

جن آنکھوں نے مندر و مسجد میں پاک باز دیکھے
اُن ہی آنکھوں نے فرقہ دارانہ امتیاز دیکھے
جن آنکھوں نے نیتاؤں کو آنسو بہاتے دیکھا
اُن ہی آنکھوں نے اُن کو قومی خزانے لُٹاتے دیکھا

بہت دیکھا ہے اب اور دیکھا نہیں جاتا
اے میرے مالک لے جا کہیں اور یہاں سے مجھے

جن آنکھوں نے موسیقی وادب کے فن کار دیکھے
ان ہی آنکھوں نے ظلم و تشدد کے خون بار دیکھے
جن آنکھوں نے دنیاوی امن کے ٹھیکے دار دیکھے
ان ہی آنکھوں نے بھیڑ کی کھال میں مکار دیکھے

بہت دیکھا ہے اب اور دیکھا نہیں جاتا
اے میرے مالک رکھ دور ایسے سماں سے مجھے

नज़्म

जिन आँखों ने क़ुदरत [1] के हसीन नज़ारे [2] देखे
उन ही आँखों ने नफ़रत के सुलगते अंगारे देखे
जिन आँखों ने शहिदान–ए–वतन को कटते देखा
उन ही आँखों ने आज़ादी–ए–मुल्क को बटते देखा
बहुत देखा है अब और देखा नहीं जाता
ऐ मेरे मालिक उठा ले इए जहाँ से मुझे
जिन आँखों ने महफ़िलों [3] में जाम [4] छलकते देखे
उन ही आँखों ने भूक से बच्चे बिलकते देखे
जिन आँखों ने माँ बाप का भरपूर प्यार देखा
उऩ ही आँखों ने घर में बदगुमानी [5] का ग़ुबार [6] देखा
बहुत देखा है अब और देखा नहीं जाता
ऐ मेरे मालिक ले जा दूर इस मकाँ [7] से मुझे
जिन आँखों ने मन्दिर–व–मस्जिद में पाकबाज़ [8] देखे
उन ही आँखों ने फ़िर्कादाराना [9] इमतियाज़ [10] देखे
जिन आँखों ने नेताओं को आँसू बहाते देखा
उन ही आँखों ने उन को कौमी ख़ज़ाने लुटाते देखा
बहुत देखा है अब और देखा नहीं जाता
ऐ मेरे मालिक ले जा कहीं और यहाँ से मुझे
जिन आँखों ने मूसीक़ी–व–अदब [11] के फ़नकार [12] देखे
उन ही आँखों ने ज़ुल्म–व–तशद्दुद [13] के ख़ूनबार [14] देखे
जिन आँखों ने दुनियावी अमन के ठेकेदार देखे
उन ही आख़ों ने भेड़ की खाल में मक्कार देखें
बहुत देखा है अब और देखा नहीं जाता
ऐ मेरे मालिक रख दूर ऐसे समाँ [15] से मुझे

---

1. प्रकृति, 2. दृश्य, 3. मनोरंजन करने के स्थान, 4. मदिरा पात्र, 5. दुर्भावना, 6.मन में जमा हुआ क्रोध, 7. स्थान, 8. पवित्र विचार वाले, 9. साम्प्रदायक, 10.विभेद, 11. गान वि द्या और सभ्यता, 12. कलाकार, 13. अत्याचार, 14. ख़ूनी, 15. वातावरण,

اختلاف

کسی کے بدن پر چیتھڑے کوئی اوڑھے دوشالہ
کوئی چاٹے خاک پاؤں کی کسی کا بول بالا
کوئی بھرے حقہ کسی کا کوئی صاحبِ عالی
کہیں کسی کے بھرے خزانے کسی کی جیب خالی
مخملی گدّوں پر سوئے کوئی کسی کا نکلے عرق
آدمی تو آدمی ہے آدمی میں ہے فرق

کوئی ترسے بوند پانی کو کوئی پیئے شراب کا پیالہ
کوئی منائے موج مستی کسی کے منہ کا چھنے نوالہ
کوئی رگڑے ایڑیاں کوئی پاؤں سے ٹھکرائے
کہیں بجتے شادیانے کوئی ماتم منائے
کسی کا پار سفینہ کسی کا بیڑا غرق
آدمی تو آدمی ہے آدمی میں ہے فرق

کسی کا بیٹا بیٹھے تخت پر کسی کا لنگڑائے
کوئی اُڑے آسمان میں کوئی گر گر جائے
کوئی رانی مہارانی کوئی بازار کی طوائف
کوئی کرے محنت مشقت کسی کو ملے وظائف
کوئی کہے ہے غرب مہذب کوئی کہے شرق
آدمی تو آدمی ہے آدمی میں ہے فرق

کوئی کہے میں ہندو کوئی کہے مسلمان
کوئی دھکیلے آگ میں کوئی بچائے جان

इख़तिलाफ़[1]

किसी के बदन पर चिथड़े कोई ओढ़े दुशाला
कोई चाटे ख़ाक पाँव की, किसी का बोल बाला
कोई भरे हुक़्क़ा किसी का, कोई साहिब–ए–आली[2]
कहीं किसी के भरे ख़ज़ाने, किसी की जेब ख़ाली
मख़मली गद्दों पर सोए कोई, किसी का निकले अर्क़[3]
आदमी तो आदमी है आदमी में है फ़र्क़
कोई तरसे बूंद पानी को कोई पीए शराब का प्याला
कोई मनाए मौज मस्ती किसी के मुहँ का छिने निवाला
कोई रगड़े ऐड़ियाँ, कोई पाँव से ठुकराए
कहीं बजें शादियाने, कोई मातम[4] मनाए
किसी का पार सफ़ीना[5], किसी का बेड़ा ग़र्क़
आदमी तो आदमी है आदमी में है फ़र्क़
किसी का बेटा बैठे तख़्त पर किसी का लंगड़ाए
कोई उड़े आसमान में, कोई गिर गिर जाए
कोई रानी महारानी, कोई बाज़ार की तवाईफ़[6]
कोई करे मेहनत मुशक़्क़त[7], किसी को मिलें वज़ाईफ़[8]
कोई कहे है ग़र्ब[9] मुहज़्ज़ब[10], कोई कहे है शर्क़[11]
आदमी तो आदमी है, आदमी में है फ़र्क़
कोई कहे मैं हिन्दू कोई कहे मैं मुसलमान
कोई धकेले आग में, कोई बचाए जान

---

1. विभेद, 2. महान व्यक्ति, 3. पसीना, 4. सोग, 5. नाव, 6. वेश्या, 7. परिश्रम, 8.अनार्जित वेतन, 9. पश्चिम, 10. सभ्य, 11. पूर्व,

کوئی پھینکے تھوک کسی پر کوئی ڈالے پھول
کوئی اپنے وعدے کا پکا تو کوئی بے اصول
کسی کے جھونپڑے میں اندھیرا کہیں زرق برق
آدمی تو آدمی ہے آدمی میں ہے فرق

پھولوں سے بھری جھولی کسی کی، کسی کے دامن میں کانٹے
کوئی کرے برداشت بے عزتی کوئی کسی کو ڈانٹے
کوئی تڑپے عشق میں کسی کو ملے وصالِ یار
کسی کے لیے بنی خزاں کسی کے لیے بہار
کسی کو نہیں میسر دو روٹی کوئی کھائے چاندی کا ورق
آدمی تو آدمی ہے آدمی میں ہے فرق

رُباعیات

اگر میں مجنوں ہوتا لیلیٰ کو پکڑ لیتا
بیچ بازار باہوں میں اپنی جکڑ لیتا
جدھر ہو رخ ہوا کا اُدھر تم چلو
حاجت مند ہوتا ناک اپنی رگڑ لیتا

ہے بندگی سے بڑھ کر شعورِ زندگی
ہے عشرت سے کہیں بہتر بے ساختگی
لو تحمل سے کام ہر مشکل میں
بھاری پڑے گی ورنہ ایسی بے ضابطگی

कोई फ़ैके थूक किसी पर, कोई डाले फूल
कोई अपने वादे का पक्का, कोई बे असूल
किसी के झोंपड़े में अंधेरा, कहीं ज़र्क बर्क़[12]
आदमी तो आदमी है आदमी में है फ़र्क़

फूलों से भरी झोली किसी की, किसी के दामन में काँटे
कोई करे बरदाश्त बेइज़्ज़ती, कोई किसी को डाँटे
कोई तड़पे इश्क में किसी को मिले विसाल–ए–यार[13]
किसी के लिए बनी ख़िजाँ[14], किसी के लिए बहार
किसी को नहीं मुयस्सर[15] दो राटी, कोई खाए चाँदी का वर्क़
आदमी तो आदमी है आदमी में है फ़र्क़

रूबाइयात

अगर मैं मजनूं होता लैला को पकड़ लेता
बीच बाज़ार बाहों में अपनी जकड़ लेता
जिधर हो रूख[16] हवा का उधर तुम चलो
हाजित मंद[17] होता नाक अपनी रगड़ लेता

है बंदगी[18] से बढ़ कर शऊर–ए–ज़िंदगी
है इश्रत[19] से कहीं बेहतर बेसाख्तगी[20]
लो तहम्मुल[21] से काम हर मुश्किल में
भारी पड़ेगी वरना ऐसी बे–ज़ाब्तगी[22]

---

12. चमक दमक, सुसज्जित, 13.प्रिय मिलन, 14, पतझड़, 15. प्राप्त,
16. दिशा, 17.दरिद्र, इच्छुक, 18. शिष्टता, 19. ऐश, 20. सादगी,
21. साहस, 22. नियम विरूद्ध, व्यवहार,

بیگم سے درخواست

ہے ایک درخواست ہماری آپ سے بیگم
زمانہ مہنگائی کا کم کیجیے فرمائشیں
تنخواہ بڑھنے سے پہلے بڑھ جاتی ہیں مانگیں
ناز و انداز چھوڑیئے کم کیجیے آسائشیں
دوکان دار سے مانگو رعایت ملتا فوراً جواب
اب کہاں رہ گئیں کاروبار میں گنجائشیں
سلسلہِ ضروریات کو نہ روک سکی زندگی
گٹھری میں باندھ دی ہیں سب خواہشیں
بدلے گی تقدیر کٹ گئی اسی امید پر زندگی
نہ ہوا کچھ حاصل کر کے دیکھ لیں ستایشیں
واضح ہوئی حقیقت ایک مدت کے بعد
اندر سے سب کھوکھلے اوپر سے نمائشیں

رُباعی

ہے کتنا آسان آسان کو مشکل بنانا
ہے کتنا مشکل مشکل کو سُلجھانا
یہی ہوتا عموماً زندگی میں اے دوست
نادانگی ہے خردماغ سے ٹکرانا

बेगम से दरख़ास्त

है एक दरख़ास्त[1] हमारी आप से बेगम
ज़माना महंगाई का कम कीजिए फ़र्माइशें[2]
तन्ख़ाह बढ़ने से पहले बढ़ जाती हैं माँगें
नाज़–ओ–अंदाज़[3] छोड़िए कम कीजिए आसाईशें[4]
दुकानदार से मांगो रिआयत मिलता फ़ौरन[5] जवाब
अब कहां रह गईं कारोबार में गुंजाईशें
सिलसिला–ए–ज़रूरियात को न रोक सकी ज़िंदगी
गठड़ी में बांध दीं हैं सब ख़ाहिशें
बदलेगी तक़दीर कट गई इसी उमीद पर ज़िंदगी
न हुआ कुछ हासिल[6] कर के देख लीं स्ताईशें[7]
वाज़ेह[8] हुई हक़ीक़त[9] एक मुद्दत के बाद
अंदर से सब खोखले ऊपर से नुमाईशें[10]

रूबाई

है कितना आसान आसान को मुश्किल बनाना
कितना मुश्किल मुश्किल को मगर सुलझाना
यही होता अमूमन[11] ज़िंदगी में ऐ दोस्त
नादानगी[12] है ख़रदिमाग़[13] से टकराना

---

1. निवेदन, 2. माँगें, 3. हांवभाव, नख़रे, 4. समृद्धि में आराम तलबी, 5. तुरंत, 6.प्राप्त, 7. प्रशंसा, 8. स्पष्ट, 9. सच्चाई, 10. दिखावा, 11. बहुधा, 12. मुर्खता, 13.गधे के दिमाग़ वाला, मूर्ख,

غزل

میں کیسے یقین کروں کہ کوئی خدا بھی ہے
غمِ زیست کے ناسُور کی کوئی دوا بھی ہے

ایک مصیبت کا جانا ہے آنا اور کا
گردشِ آیام کی کوئی انتہا بھی ہے

معین ہے انسانِ ناچیز کی نا اُستواری
نجاتِ فِکر دُنیا کے لیے کوئی دعا بھی ہے

کبھی تو لے سکوں چین سے میں سانس اپنی
غلیظگیِ بدگمانی سے خالی کوئی فِضا بھی ہے

عشق میں کس نے پائی ہے راحتِ دل
بسملِ فراق سے بڑھ کر کوئی سزا بھی ہے

قطعہ

میں نہ ہوتا تو کیا ہوتا
نہ خدا ہوتا نہ جہاں ہوتا
دنیا دیکھتی رہ جاتی مجھے
نہ میں یہاں ہوتا نہ وہاں ہوتا

ग़ज़ल

मैं कैसे यकीन करूँ के कोई ख़ुदा भी है

ग़म–ए–ज़ीस्त[1] के नासूर[2] की कोई दवा भी है

एक मुसीबत का जाना है आना और का

गर्दिश–ए–अयाम[3] की कोई इंतिहा[4] भी है

मुऐयन[5] है इंसान–ए–नाचीज़[6] की नाउस्तवारी[7]

निजात–ए–फ़िक्र–ए–दुनिया[8] के लिए कोई दुआ भी है

ले सकूँ चैन से मैं साँस अपनी

ग़लीज़गी[9]–ए–बदगुमानी[10] से ख़ाली कोई फ़िज़ा[11] भी है

इश्क़ में किस ने पाई है राहत–ए–दिल[12]

बिसमिल[13]–ए–फ़िराक़[14] से बढ़ कर कोई सज़ा भी है

क़ता

मैं न होता तो क्या होता

न ख़ुदा होता न जहाँ होता

दुनिया देखती रह जाती मुझे

न मैं यहाँ होता न वहाँ होता

---

1. ज़िंदगी के दुःख, 2. वह ज़ख्म जो सदा रिस्ता रहे, 3. चक्र, 4. अंत, 5. निश्चित, 6. तुच्छ मानव, 7. अस्थिरता, 8. जीवन की चिंताओं से छुटकारा, 9. मल, गंदगी, 10. दुर्भावना, 11. वातावरण, 12. मन की शाँति, 13. घायल, 14. वियोग,

غزل

تیرا ہی تصور دیکھا جس طرف نظر اٹھائی ہم نے
داستانِ عشق کئی بار لکھی کئی بار مٹائی ہم نے
مل گیا ہم کو اپنی بربادی کا سامان
سینے کی آگ جب دل کو لگائی ہم نے
ترک کر دیا دنیا کو اور دنیا داری کو
تجھ سے عہدِ وفا کی قسم جب کھائی ہم نے
عالمِ مدہوشی میں توڑ دیئے جام بے ساختہ
ہوئی پھر جواں تمنا اوک سے جب پلائی تم نے
تم آنے کا وعدہ کر گئے آئے نہ لوٹ کر
تیری یادوں کے سہارے ہر رات بتائی ہم نے

قطعہ

مت اُڑاوٗ مذاق ہماری ضعیفی کا
اے جوانو ابھی ہمارا دل زندہ ہے
تم کیا کروگے قدر حسن والوں کی
عاشقی میں ماہر یہ ناچیز بندہ ہے

ग़ज़ल

तेरा ही तसव्वर[1] देखा जिधर नज़र उठाई हमने

दासतान–ए–इश्क कई बार लिखी कई बार मिटाई हमने

मिल गया हम को अपनी बरबादी का सामान

सीने की आग जब दिल को लगाई हमने

तर्क[2] कर दिया दुनिया को और दुनियादारी[3] को

तुझ से अहद–ओ–वफ़ा [4] की क़सम जब खाई हमने

आलम–ए–मदहोशी [5] में तोड़ दिए जाम [6] बेसाख़्ता [7]

हुई फिर जवाँ तमन्ना [8] ओक[9] से जब पिलाई तुमने

तुम आने का वादा कर गए आए न लौट कर

तेरी यादों के सहारे हर रात बिताई हमने

क़ता

मत उड़ाओ मज़ाक़ हमारी ज़ईफ़ी[10] का

ऐ जवानो अभी हमारा दिल ज़िंदा है

तुम क्या करोगे क़द्र[11] हुस्नवालों की

आश्की में माहिर[12] यह नाचीज़[13] बंदा है

---

1. अक्स, प्रतिबिंब, 2. छोड़ देना, 3. संसार के धंधे, 4. वफ़ा का वचन, 5.मदोन्मा अवस्था में, 6. प्याले, 7. बेधड़क, 8. इच्छा, 9. चुल्लू, 10. वृद्ध अवस्था, 11. मान, 12. निपुण, 13. साधारण,

غزل

کیا کریں اس شہر میں کوئی گوشۂ سکوں نہیں
گِر جائیں گر راہ پر کوئی سرنگوں نہیں
نہ کہیں ہے بوئے گل نا کوئی ادبی فضا
ہے کوئی ایسا بشر دولت کا جنوں نہیں
جو پڑھا تھا کل ویسا لکھا ہے آج بھی
قتل و غارت کے سوا کوئی مضموں نہیں
وفا کا ذکر کیا ہے محبت بھی بے اصول
نہیں ایسا کوئی سودا جس میں فسوں نہیں
فاصلہ بڑھ گیا اتنا اڑوس سے پڑوس تک
مشکل میں مشکل پڑی کسے کہوں کہوں نہیں

قطعہ

کچھ تو کرو خیال ہماری عمر کا
اتنا وقت نہیں اور انتظار کا
چھٹتا نہیں منہ سے پیالہ عشق کا
ابھی بھی ہے اثر باقی خمار کا

ग़ज़ल

क्या करें इस शाहर में कोई गोशा[1]–ए–सकु[2] नहीं
गिर जाएँ गर राह पर कोई सरनगू[3] नहीं
न कहीं है बू–ए–गुल[4] न कोई अदबी[5] फ़िज़ा[6]
है कोई ऐसा बशर[7] दौलत का जनूं नहीं
जो पढ़ा था कल वैसा लिखा है आज भी
क़त्ल–व–ग़ारत[8] के सिवा कोई मज़मू[9] नहीं
वफ़ा का ज़िकर क्या है मुहब्बत भी बेअसूल
नहीं कोई ऐसा सौदा जिस में फ़सू[10] नहीं
फ़ासला बढ़ गया इतना अड़ोस से पड़ोस तक
मुशकिल में मुशकिल पड़ी किसे कहूँ कहूँ नहीं

क़ता

कुछ तो करो ख़ायाल हमारी उम्र का
इतना वक़्त नहीं और इंतिज़ार का
छुटता नहीं मुंह से प्याला इश्क़ का
अभी भी है असर[11] बाक़ी ख़ुमार[12] का

1. कोना, 2. शाँति, 3. लज्जित, 4. फूल की महक, 5. सभ्य, 6. वातावरण, 7. आदमी, 8. लूटमार, 9. लेख, 10. इन्द्रजाल, 11. प्रभाव, 12. नशा,

غزل

یہ دولت جو کبھی باعثِ مسرت تھی
سر درد بن کر اب رولاتی ہے
تہ خانوں کے اندھیرے راستوں میں
زندگی اپنے وجود سے گھبراتی ہے
ڈالتا ہوں جب ایک نظر اپنے ماضی پر
اپنے کردار سے روح کانپ جاتی ہے
حق جو چھینا میں نے بے سہاروں کا
مظلوموں کی چیخ و پکار ستاتی ہے
دیکھتا ہوں رات کو جب بھیانک خواب
اپنی بے رحمی تشدد سے یاد آتی ہے
کیا کروں امید نجاتِ فکر کی
اپنی آنکھ اپنے چہرے سے شرماتی ہے
موت آتے آتے بھی تو نہیں آتی
صبح شام بس سر پر منڈلاتی ہے
پڑا ہو آدمی جب بسترِ مرگ پر
اپنی اولاد بھی آنکھیں چراتی ہے
خوفِ موت سے کانپتا ہے دل ایسے
بجھنے سے پہلے شمع جوں پھڑپھڑاتی ہے
آگِ دوزخ میں جھلسنے سے پیشتر
تصویرِ آتشِ دوزخ جلاتی ہے
کیسے کہوں بخش دے گناہ میرے
دعا کرتے ہوئے زبان لرزاتی ہے

ग़ज़ल

यह दौलत जो कभी बाइस–ए–मुसर्रत[1] थी
सर दर्द बन कर अब रूलाती है
तहख़ानों के अंधेरे रास्तों में
ज़िन्दगी अपने वजूद[2] से घबराती है
डालता हूँ जब एक नज़र अपने माज़ी पर
अपने किरदार[3] से रूह[4] काँप जाती है
हक़ जो छीना मैं ने बेसहारों का
मज़लूमों[5] की चीख़–ओ–पुकार अब सताती है
देखता हूँ रात को जब भयानक ख़ाब
अपनी बेरहमी तशद्दुद[6] से याद आती है
क्या करूँ उमीद निजात–ए–फ़िक्र[7] की
अपनी आँख अपने चेहरे से शरमाती है
मौत आते आते भी तो नहीं आती
सुबह शाम बस सर पर मंडलाती है
पड़ा हो आदमी जब बिस्तर–ए–मर्ग[8] पर
अपनी औलाद भी आँखें चुराती है
खौफ़–ए–मौत से काँपता है दिल ऐसे
बुझने से पहले जूँ शमा फड़फड़ाती है
आग–ए–दोज़ख में झुलसने से पेश्तर[9]
तसवीर–ए–आतिश–ए–दोज़ख[10] जलाती है
कैसे कहूँ बख़्श दे गुनाह मेरे
दुआ करते हुए ज़बान लरज़ाती[11] है

---

1. खुशी का कारण, 2. अस्तित्व, 3. कर्म, 4. आत्मा, 5. उत्पीड़ित, 6. दमन, 7.भय

غزل

یہ دولت جو کبھی باعثِ مسرت تھی
سر درد بن کر اب رولاتی ہے
تہ خانوں کے اندھیرے راستوں میں
زندگی اپنے وجود سے گھبراتی ہے
ڈالتا ہوں جب ایک نظر اپنے ماضی پر
اپنے کردار سے روح کانپ جاتی ہے
حق جو چھینا میں نے بے سہاروں کا
مظلوموں کی چیخ و پکار ستاتی ہے
دیکھتا ہوں رات کو جب بھیانک خواب
اپنی بے رحمی تشدد سے یاد آتی ہے
کیا کروں امید نجاتِ فکر کی
اپنی آنکھ اپنے چہرے سے شرماتی ہے
موت آتے آتے بھی تو نہیں آتی
صبح شام بس سر پر منڈلاتی ہے
پڑا ہو آدمی جب بسترِ مرگ پر
اپنی اولاد بھی آنکھیں چراتی ہے
خوفِ موت سے کانپتا ہے دل ایسے
بجھنے سے پہلے شمع جوں پھڑپھڑاتی ہے
آگِ دوزخ میں جھلسنے سے پیشتر
تصویرِ آتشِ دوزخ جلاتی ہے
کیسے کہوں بخش دے گناہ میرے
دعا کرتے ہوئے زبان لرزاتی ہے

ग़ज़ल

यह दौलत जो कभी बाइस–ए–मुसर्रत[1] थी
सर दर्द बन कर अब रूलाती है
तहख़ानों के अंधेरे रास्तों में
ज़िन्दगी अपने वजूद[2] से घबराती है
डालता हूँ जब एक नज़र अपने माज़ी पर
अपने किरदार[3] से रूह[4] काँप जाती है
हक़ जो छीना मैं ने बेसहारों का
मज़लूमों[6] की चीख़–ओ–पुकार अब सताती है
देखता हूँ रात को जब भयानक ख़्वाब
अपनी बेरहमी तशद्दुद[6] से याद आती है
क्या करूँ उमीद निजात–ए–फ़िक्र[7] की
अपनी आँख अपने चेहरे से शरमाती है
मौत आते आते भी तो नहीं आती
सुबह शाम बस सर पर मंडलाती है
पड़ा हो आदमी जब बिस्तर–ए–मर्ग[8] पर
अपनी औलाद भी आँखें चुराती है
खौफ़–ए–मौत से काँपता है दिल ऐसे
बुझने से पहले जूँ शमा फड़फड़ाती है
आग–ए–दोज़ख में झुलसने से पेश्तर[9]
तसवीर–ए–आतिश–ए–दोज़ख[10] जलाती है
कैसे कहूँ बख़्श दे गुनाह मेरे
दुआ करते हुए ज़बान लरज़ाती[11] है

---

1. खुशी का कारण, 2. अस्तित्व, 3. कर्म, 4. आत्मा, 5. उत्पीड़ित, 6. दमन, 7.भय से मुक्ति, 8. मृत्युशय्या, 9. पहले, 10. नरक की आग का चित्र, 11. काँपती,

غزل

محتاجِ زندگی ہے وہ ہر رات سے
کتنا بھی ہو گل افشاں شباب سے
بخشش سے نہیں ہوتی معدوم غربت
دُھل جاتے نہیں بد افعال ثواب سے
تم ہزار بار دلاؤ یقین آنے کا
لگائے لگتی نہیں آنکھ اضطِراب سے
نا ہو جب تک جذبہِ تکمیل پکا
بنتی نہیں کتابِ عمر دو چار باب سے
دیکھنے میں بھلے لگے وہ لال پری
کھِلتی نہیں چہرے کی رنگت شراب سے

قطعہ

تم مانگتے ہو حساب میرے گناہوں کا
میں پوچھتا ہوں کیا ہُوا میری آہوں کا
چند ٹکڑے بانٹ کر کہتے ہو تم سخی
بے رحمی سے کردیا مگر خون تمناؤں کا

ग़ज़ल

मौहताज[1]–ए–ज़िंदगी है वह हर रात से
कितना भी हो गुल अफ़शाँ[2] शबाब[3] से
बख़्शिश[4] से नहीं होती मैदूम[5] गुर्बत
धुल जाते नहीं बदअफ़ाल[6] सवाब[7] से
तुम हज़ार बार दिलाओ यक़ीन आने का
लगाए लगती नहीं आँख इज़तिराब[8] से
न हो जब तक जज़बा–ए–तकमील[9] पक्का
बनती नहीं है किताब–ए–उम्र दो चार बाब[10] से
देखने में भले वह लगे लाल परी
खिलती नहीं चेहरे की रंगत शराब से

क़ता

तुम मांगते हो हिसाब मेरे गुनाहों का
मैं पूछता हूँ क्या हुआ मेरी आहों का
चंद टुकड़े बांटकर कहते हो तुम सख़ी[11]
बेरहमी से कर दिया मगर ख़ून तमन्नओं[12] का

---

1. निर्भर, 2. खिला हुआ फूल, 3. जवानी, 4. दान, 5. ग़रीबी का मिट जाना, 6.बुरे काम, 7. पुण्य, 8. व्याकुलता, 9. कार्य को पूरा करने का जोश, 10. अध्याय, 11.दानवीर, 12. इच्छाओं,

غزل

دیر و حرم بہت تھے میں مگر انجان تھا
پوچھتا ہر اجنبی سے میرا کیا ایمان تھا
نہیں اب توفیق مجھ میں سرفروشی کی
تب کی بات اور ہے تب میں جوان تھا
روندگیا طوفان ناگہاں ایک ہی وار میں
جس فصل استادہ پر نازاں دہقان تھا
دیکھو تو رُخِ ہوازمانہ کی بے رخی
جو آج بیابان ہے کل گلستان تھا
تھا جن پر بھروسہ کی امانت میں خیانت
درویش کی صدا میں بولتا شیطان تھا

رُباعی

محفلِ یارانِ ماضی ہم نے آج جمائی ہے
یادوں کے کھنڈرات میں نئی شمع جلائی ہے
منتشر خیالاتِ ہم سخن مُلحق کر کے
باب اخری کی ابتدا از سر نو بنائی ہے

ग़ज़ल

दैर–ओ–हर्म[1] बहुत थे मैं मगर अंजान था

पूछता हर अजनबी से मेरा क्या ईमान था

नहीं अब तौफ़ीक़[2] मुझ में सरफ़रोशी[3] की

तब की बात और है तब मैं जवान था

रौंद गया तूफ़ान नागहाँ[4] एक की वार में

जिस फ़सल इसतादा[5] पर नाज़ां[6] दिहकान[7] था

देखो तो रूख़[8]–ए–हवा–ए–ज़माना की बेरूख़ी[9]

जो आज बियाबान[10] है कल गुलिस्तान[11] था

था जिन पर भरोसा की अमानत में ख़ियानत[12]

दरवेश[13] की सदा में बोलता शैतान था

रूबाई

महफ़िल–ए–यारान[14]–ए–माज़ी हमने आज जमाई है

यादों के खंडरात में नई शमा जलाई है

मुंतशिर[15] ख़्यालात–ए–हमसुख़न[16] मुलहिक[17] करके

बाब–ए–आख़री[18] की इबितदा[19] अज़सर–ए–नौ[20] बनाई है

---

1. पूजा स्थान, 2. सामर्थ्य, 3. जान पर खेलना, 4.सहसा, 5.खड़ी हुई,6. अभिमान, 7.किसान, 8.वायु की दिशा, 9.बेपरवाही, 10. उजाड़, 11. उपवन, 12. विश्वास घात, 13. साधू, 14. पुराने मित्रों की सभा, 15. अस्त व्यस्त, 16. हममत लोगों के विचार, 17. जोड़ कर, 18. अंतिम अध्याय, 19. आरंभ, 20. नये सिरे से,

غزل

کیا عشق نے برباد رفتہ رفتہ
ہوا عالمِ الم آباد رفتہ رفتہ
شام کے ڈھلتے ہوئے سائے کی طرح
ہوا دلِ معصوم ناشاد رفتہ رفتہ
دیکھ کر ہمیں پہلے وہ چپ رہے
ہوا اندر آنے کا ارشاد رفتہ رفتہ
بنے فقرا سے اُمرا جب ہم
بھول گئے اپنے اجداد رفتہ رفتہ
ہو کر لاچار اپنی ضعیفی سے
چلے گئے سب استاد رفتہ رفتہ
جلد بازی سے نہ ہو کوئی کام صحیح
کرتی ہے ہم وار خراد رفتہ رفتہ

رُباعی

شُکر اُس خدا کا جس نے مئے بنائی
نغمۂ حیات کی حزمین لے بنائی
بھاگ نہ سکے انسان گرفتِ موت سے
عقل کے گھوڑے کی ہستی بے پے بنائی

ग़ज़ल

किया इश्क़ ने बरबाद रफ़्ता[1] रफ़्ता
हुआ आलम–ए–अलम [2] आबाद रफ़्ता रफ़्ता
शाम के ढलते हुए साए की तरह
हुआ दिल–ए–मासूम[3] नाशाद[4] रफ़्ता रफ़्ता
देखा के हमें पहले वह चुप रहे
हुआ अंदर आने का इर्शाद [5] रफ़्ता रफ़्ता
बने फुक़रा[6] से उमरा[7] जब हम
भूल गऐ अपने अजदाद [8] रफ़्ता रफ़्ता
हो कर लाचार अपनी ज़इफ़ी[9] से
चले गए सब उस्ताद[10] रफ़्ता रफ़्ता
जल्दबाज़ी से न हो कोई काम सही
करती है हमवार[11] ख़राद[12] रफ़्ता रफ़्ता

रूबाई

शुक्र उस ख़ुदा का जिसने मै [13] बनाई
नग़मा–ए–हयात[14] की हज़ीन[15] लै बनाई
भाग न सके इंसान गिरिफ़्त–ए–मौत[16] से
अक़्ल के घोड़े की हस्ती बेपै [17] बनाई

---

1. धीरे धीरे, 2. दुःख का संसार, 3. सादा दिल, 4. अप्रसन्न, 5. आदेश, 6. निर्धन, 7. धनवान, 8. पूर्वज, 9. वृद्धअवस्था, 10. गुरू, 11. समतल, 12. रंदा, 13. शराब, 14. जीवन का राग, 15. दर्दनाक, 16. मृत्यु की पकड़ से,17. बिना पैर के,

غزل

بہت پریشان ہوں تیری دنیا سے اے خدا
انسانوں کی بستی میں میری اوقات ہے کیا
جہاں جاؤں پوچھتے ہیں میری بود و باش
مذہب کیا ہے، فرقہ کیا ہے، ذات ہے کیا
نشانہِ آفات ہوں سراپا یاس و حرماں
بے یار و مددگار میری بساط ہے کیا
وسیلہ ڈھونڈتا ہوں مل جائے کوئی مستغنی
مجھ حاجت مند مفلس کی ثبات ہے کیا
برسوں سے کھوج رہا ہوں کھوئی جوانی کو
ضعیف سے نہیں پوچھتا کوئی بات ہے کیا

رُباعیات

جس کے لیے ہم نے رکھی تھی زندگی سنبھال کر
وہ چپکے سے آیا لے گیا ہمارا دل نکال کر
بے حس و حرکت جان کا کیا کروں میں
اے خدایا آخری وقت میں یوں نہ پامال کر

یہ بھی کوئی آنا ہوا کچھ کھایا نہ پیا
حساب وہیں کا وہیں رہا کچھ لیا نہ دیا
جمع نفی سے چلتا ہے دنیا کا کاروبار
جوڑ جوڑ کر مرگئے یوں ہی کچھ کیا نہ کیا

ग़ज़ल

बहुत परेशान हूँ तेरी दुनिया से ऐ ख़ुदा
इंसानों की बस्ती में मेरी औक़ात[1] है क्या
जहाँ जाऊँ पूछते है मेरी बूद-व-बाश[2]
मज़हब क्या है फ़िर्क़ा[3] क्या है, ज़ात है क्या
निशाना-ए-आफ़ात[4] हूँ, सरापा[5] यास-व-हिर्मान[6]
बे यार-व-मददगार मेरी बिसात[7] है क्या
वसीला[8] ढूंढ़ता हूँ मिल जाए कोई मुस्तग़नी[9]
मुझ हाजतमंद[10] मुफ़लिस[11] की सबात[12] है क्या
बरसों से खोज रहा हूँ खोई जवानी को
ज़ईफ़[13] से नहीं पूछता कोई बात है क्या

रूबाइयात

जिस के लिए हम ने रखी थी ज़िंदगी संभाल कर
वह चुपके से आया ले गया हमारा दिल निकाल कर
बे हिस-ओ-हरकत[14] जान का क्या करूँ मैं
ऐ ख़ुदाया आख़ारी वक़्त में यों न पामाल[15] कर

यह भी कोई आना हुआ कुछ खाया ना पीया
हिसाब वहीं का वहीं रहा कुछ लिया न दीया
जमा नफ़ी[16] से चलता है दुनिया का कारोबार[17]
जोड़ जोड़ कर मर गए योंही कुछ किया न किया

---

1. प्रतिष्ठा, 2. रिहाइश, 3. दल, 4. आपत्तियों का निशाना, 5. सिर से पाँव तक, 6.निराश, 7. सामर्थ्य, 8. आश्रय, 9. धनवान, 10. ज़रूरतमंद, 11. दरिद्र, 12.स्थिरता, 13. वृद्ध, 14. बिना गति के, 15. बरबाद, 16. न्यूनता, 17. कार्य,

غزل

کیوں کرتے سودا آبرو جو تم خفا نہ ہوتے
ہم بھی سر کش ہوتے جو تم خدا نہ ہوتے
کی ہر ممکن کوشش تمھیں اپنا بنانے کی
نا ہوتا زندگی سے تکرار جو تم بے وفا نہ ہوتے
خُلد سے آدم کو تو نے نکالا تو کیا ہوا
ہم بھی بنا لیتے ارم جو گرفتِ قضا نہ ہوتے
کس سے کریں شکوہ ہم اپنی اسیری کا
اس جسم خاکی میں جو عناصر دغا نہ ہوتے
ہو جاتا اگر تذکرہ انصاف کا دو بدُو
ہم گنہگار نہ ہوتے تم بے گناہ نہ ہوتے
ہر پاِ زیست نقش تھا نوشتہِ تقدیر کا
ہو جاتا تم سے سامنا جو تم بقا نہ ہوتے

قطعہ

ہونا تھا جو رُسوا تیری گلی میں
ہمارا گزر کہیں اور سے کیوں ہوتا
جو تم نہ ملاتے نظریں ہم سے
کیوں انتظار میں دلِ ناشاد روتا

ग़ज़ल

क्यों करते सौदा–ए–आबरू[1] जो तुम ख़फ़ा न होते
हम भी सरकश[2] होते जो तुम ख़ुदा न होते
की हर मुमकिन[3] कोशिश तुम्हें अपना बनाने की
न होता ज़िंदगी से तकरार[4] जो तुम बेवफ़ा न होते
ख़ुल्द[5] से आदम[6] को तू ने निकाला तो क्या हुआ
हम भी बना लेते इरम [7] जो गिरिफ़्त–ए–कज़ा [8] न होतें
किस से करें शिक्वा[9] हम अपनी असीरी[10] का
इस जिस्म–ए–ख़ाकी [11] में जो अनासर–ए–दग़ा [12] न होते
हो जाता अगर तज़्किरा[13] इंसाफ़ का दूबदू[14]
हम गुनहगार[15] न होते तुम बेगुनाह[16] न होते
हर पा–ए–ज़ीस्त [17] नक़्श था नविश्ता–ए–तकदीर [18] का
हो जाता तुम से सामना जो तुम बक़ा[19] न होते

क़ता

होना था जो रुस्वा[20] तेरी गली में
हमारा गुज़र कहीं और से क्यों होता
जो तुम ना मिलाते नज़रें हम से
क्यों इंतज़ार में दिल–ए–नाशाद[21] रोता

---

1. प्रतिष्ठा का भाव, 2. अहंकारी, 3. संभव प्रयत्न, 4. झगड़ा, 5. स्वर्ग, 6. प्रथम मानव, 7. स्वर्ग, 8. मृत्यु की पकड़, 9. गिला, 10. क़ैद, दासता, 11. मिट्टी का शरीर, 12. छल कपट के तत्व, 13. प्रसंग, 14. आमने सामने, 15. पापी, दोषी, 16.निर्दोष, 17. जीवन का पग, 18. भाग्य का लिखा, 19. अमर, 20.बदनाम, 21. अप्रसन्न मन,

غزل

قطرے میں لہو ہے بحر کا
خون اُبلتا ہے ہر لہر کا
ارض و سمان کے درمیان
رقص ہے ماہ و مہر کا
گرمی میں سرگرمی توبہ
کرو کچھ تو خیال دوپہر کا
شب کی سیاہی میں کیا ہوا
بھیگا ہوا ہے دامن سحر کا
ہاتھ میں تسبیح رسول کی
آستیں میں خنجر زہر کا

رُباعی

نہ کرو ناپاک ماحول کو اے ساکنان ارض
کھا جائے گا تمھیں ایک دن تمھارا بنایا مرض
ڈھونڈتے رہ جاؤ گے نہ ملے گا کنارہ کوئی
ڈبو دے گی اپنے سیلاب میں اُبھرتی لہر غرض

ग़ज़ल

क़तरे में लहू है बहर[1] का
ख़ून उबलता है हर लहर का
अर्ज़–व–समाँ[2] के दरमियान
रक़्स[3] है माह–व–मेहर[4] का
गरमी में सरगरमी[5] तोबा
करो कुछ तो ख़्याल दोपहर का
शब[6] की सिहायी[7] में क्या हुआ
भीगा हुआ है दामन[8] सहर[9] का
हाथ में तस्बीह[10] रसूल[11] की
आस्तीन[12] में ख़ँजर ज़हर का

रूबाई

न करो नापाक माहौल[13] को ऐ सकिनान–ए–अर्ज़[14]
खा जाएगा तुम्हें एक दिन तुम्हारा बनाया मर्ज़[15]
ढूँढते रह जाओगे न मिलेगा किनारा कोई
डुबो देगी अपने सैलाब[16] में उमरती लहर–ए–ग़र्ज़[17]

1.समुद्र, 2.पृथवी और आकाश, 3.नृत्य, 4.चाँद और सूर्य, 5.भाग दौड़, पूरा जोश, 6.रात, 7. अंधेरा, 8.पल्लू, 9.प्रातःकाल, 10.जपमाला, 11.पैग़मबर, 12.कमीज़ का बाज़ू, 13.वातावरण, 14.पृथ्वी पर रहने वाले, 15.रोग, 16.बाढ़, 17.स्वार्थ की लहर,

غزل

نہ کرو گُل قندیلِ امید ابھی حیات باقی ہے
طلوع ہوگا آفتاب آخر ابھی کچھ رات باقی ہے
کیا ملے گا تسکین شور و غل کے عالم میں
وہ دیکھ مناظرِ قدرت کی سوغات باقی ہے
نا ہو پست ہمت دیکھ کر فلک پر بکھرے بادل
ملے گا کھیت کو پانی ابھی موسمِ برسات باقی ہے
بنی فضا زہر کارخانوں کے خس و خاساک سے
فنا لابدی جب تک آدم کی ذات باقی ہے
کُتبِ فلسفہ و مذہب پڑھ لیے سب مگر
دھول سے ڈھکی خود شناسائی کی کتاب باقی ہے
لڑاکو جہازوں کی اُڑان سے نہ ہو مغلوب دشمن
فتح یقیناً گر قومی کردار کی ثبات باقی ہے

رُباعی

ہے کوئی شخص ایسا جس کا کوئی دُشمن نہیں
نہ دیکھی ہو خزاں ایسا کوئی چمن نہیں
کوئی تو ہے خلا ارض و سماں کی بناوٹ میں
نہ آتی ہو بوِ جنگ ایسا کوئی امن نہیں

ग़ज़ल

न करो गुल कंदील–ए–उमीद [1] अभी हयात [2] बाक़ी है
तुलू[3] होगा आफ़ताब[4] आख़िर अभी कुछ रात बाक़ी है
क्या मिले गा तस्कीन[5] शोर–ओ–गुल के आलम[6] में
वह देख मनाज़िर–ए–कुदरत[7] की सौग़ात[8] बाक़ी है
न हो पस्त हिम्मत [9] देख कर फ़लक [10] पर बिखरे बादल
मिलेगा खेत को पानी अभी मौसिम–ए–बरसात बाक़ी है
बनी फ़िज़ा [11] ज़हर कारखानों के ख़स–ओ–ख़ासाक [12] से
फ़ना[13] लाबदी[14] जब तक आदम[15] की ज़ात बाक़ी है
कुतुब–ए–फ़लसफ़ा [16]–ओ–मज़हब पढ़ लिए सब मगर
धूल से ढकी खुदशनासाई[17] की किताब बाकी है
लड़ाकू जहाज़ों की उड़ान से न हो मग़लूब [18] दुशमन
फ़तेह यकीनन [19] गर क़ौमी किरदार [20] की सबात [21] बाक़ी है

रुबाई

है कोई शख़्स ऐसा जिसका कोई दुश्मन नहीं
न देखी हो ख़िज़ाँ[22] ऐसा कोई चमन[23] नहीं
कोई तो है ख़ला [24] अर्ज़–ओ–समाँ [25] की बनावट मे
न आती हो बू–ए–जंग[26] ऐसा कोई अमन नहीं

1.आशा की रौश्नी, 2.जीवन, 3.उदय, 4.सूर्य, 5.शाँति, 6.संसार, 7.प्रकृति के दृश्य, 8.उपहार, 9.हतोत्साहत, 10.आकाश, 11. वायुमंडल, 12.कूड़ा करकट, 13.मृत्यु, 14.अनिवार्य, 15.मानव, 16.दर्शनशास्त्र और धर्म पर लिखी हुई पुस्तकें, 17.अपनी पहचान, 18.पराजित, 19.निःसंदेह, 20.देशचरित्र, 21.दृढ़ता, 22.पतझड़, 23.उपवन, 24.कमी, 25.धरती और आकाश, 26.लड़ाई की गंध,

غزل

تسلسلِ تمنا لے گئی درِ جاناں پے بار بار
ایک آرزو تھی دیدار ہو جائے اُن کا
مانندِ سایہ لپٹے رہے اُن کے قدموں سے
نادانستہ کسی دن دل کھو جائے اُن کا
عشوہ گری شیوہ نہ سہی ڈرتا ہوں مگر
آنسوؤں سے کوئی دل نہ ڈبو جائے اُن کا
لاکھ سمجھایا ہے تکبر علامت ادبار کی
کرتا ہوں دعا مقدر نہ سو جائے اُن کا
جب اٹھایا ہے بار عشق پھر لڑکھڑانا کیسا
ہم خون بہا دیں گے پسینہ جو بہے اُن کا

قطعہ

ایک اُڑتی سی خبر آئی ہے اُن کی گلی سے
وہ نکلیں گے ہماری گلی سے سینہ تان کے
حسن والوں کی جرأت کی دینی ہو گی داد
نظروں سے اُڑاتے ہیں پرخچے دلِ انسان کے

ग़ज़ल

तसल्सुल-ए-तमन्ना [1] ले गई दर-ए-जानां [2] पे बार बार

एक आरज़ू[3] थी दीदार[4] हो जाए उनका

मानिंद-ए-साया[5] लिपटे रहे उनके कदमों से

नादानिस्ता[6] किसी दिन दिल खो जाए उनका

इश्वागिरी[7] शेवा[8] न सही डरता हूँ मगर

आँसूं से कोई दिल न डुबो जाए उनका

लाख समझाया है तकब्बुर [9] अलामत [10] अदबार [11] की

करता हूँ दुआ मुक़द्दर[12] न सो जाए उनका

जब उठाया है बार-ए-इश्क़ [13] फ़िर लड़खड़ाना कैसा

हम ख़ून बहा देंगे पसीना जो बहे उनका

क़ता

एक उड़ती सी ख़बर आई है उन की गली से

वह निकलेंगे हमारी गली से सीना तान के

हुस्नवालों की जुरअत[14] की देनी होगी दाद

नज़रों से उड़ाते हैं परख़चे [15] दिल-ए-इंसान क`

---

1. लगातार इच्छा, 2. प्रेमी के घर तक, 3. इच्छा, 4. दशर्न, 5. परछाईं के समान. 6.अनजाने में, 7. अंदाज़ दिखाना, 8. चलन, 9. सौंदर्य का अहंकार, 10. लक्षण, 11.बद किस्मती, 12. भाग्य, 13. प्रेम का भार, 14. निडरता, 15.टुकड़े टुकड़े करना,

غزل

آتشِ عشق نے جلایا آہستہ آہستہ
فولاد سے موم بنایا آہستہ آہستہ
نشہِ حسن کی لطافت سے ہوئے آشنا
آہُو چشم نے جام پلایا آہستہ آہستہ
بہشتِ بریں مل گئی سرزمین پر
آغوش میں جب سُلایا آہستہ آہستہ
ہوئے اُن کی سادگی پر فریفتہ ایسے
سب کچھ داو پر لگایا آہستہ آہستہ
قلیل ہوگیا اعتماد خدا پر
تقدیر نے جب ٹھکرایا آہستہ آہستہ
آگئے ہم ابلیس کی گرفت میں
جالِ ہوس جو پھیلایا آہستہ آہستہ
کُھل گیا راز ہماری ملاقاتوں کا
آہستہ سے جب بلایا آہستہ آہستہ

رُباعی

اٹھاؤ بُوریا بستر سیلاب آنے والا ہے
خدا جانے کیا کیا غضب ڈھانے والا ہے
کب تک رکھو گے حُسن کو گُدڑی میں سنبھال کر
دیکھو غور سے گلِ شباب مُرجھانے والا ہے

ग़ज़ल

आतिश–ए–इश्क़[1] ने जलाया आहिस्ता आहिस्ता
फ़ौलाद से मोम बनाया आहिस्ता आहिस्ता
नशा–ए–हुस्न की लताफ़त[2] से हुए आशना[3]
आहू चश्म[4] ने जाम पिलाया आहिस्ता आहिस्ता
बिहिश्त–ए–बरीं[5] मिल गई सरज़मीन[6] पर
आग़ोश[7] में जब सुलाया आहिस्ता आहिस्ता
हुए उनकी सादगी पर फ़रेफ़ता[8] ऐसे
सब कुछ दाव पर लगाया आहिस्ता आहिस्ता
क़लील[9] हो गया एतिमाद[10] खुदा पर
तक़दीर ने जब ठुकराया आहिस्ता आहिस्ता
आ गए हम इबलीस[11] की गिरिफ़्त[12] में
जाल–ए–हवस[13] जो फैलाया आहिस्ता आहिस्ता
खुल गया राज़ हमारी मुलाक़ातों का
आहिस्ता से जब बुलाया आहिस्ता आहिस्ता

रूबाई

उठाओ बोरिया बिस्तर सैलाब[14] आने वाला है
ख़ुदा जाने क्या क्या ग़ज़ब[15] ढाने वाला है
कब तक रखोगे हुस्न को गुदड़ी में संभाल कर
देखो ग़ौर से गुल–ए–शबाब[16] मुरझाने वाला है

---

1. प्रेमाग्नि, 2. कोमलता, 3. परिचित, 4. मृगनैनी, 5. स्वर्गलोक, 6. धरती के ऊपर, 7. गोद, 8. मुग्ध, 9. कम, 10. विश्वास, 11. शैतान, 12. पकड़, 13. लालच का जाल, 14. ज्वार, 15. अत्याचार, 16. यौवन का पुष्प,

غزل

سراب تھی تیری محبت بھٹکتا رہا میں در بدر
توہی نہ ملا کس کو دیتا اپنے مرنے کی خبر
ہر بار تیرے در سے مایوس لوٹ آیا مگر
کیا کروں یہ تشنہ دل ہے بہت بے صبر
حسن تزئین جسم ہے تو دردِ عمر
ہوس میں ملبوس تھا جس نے بھی ڈالی نظر
بے شمار تھے راستے بہت ملے راہ گیر
پونچھ لے آنسو میرے ملا نہ کوئی ہم سفر
تیرا دل پتھر ہے یا تیری کوئی مجبوری
چھوٹے گا نہ مگر تیری راہ سے میرا گزر

رُباعی

آگ لگا کر پوچھتے ہو آگ لگائی کس نے
بات بنا کر پوچھتے ہو بات بنائی کس نے
ہم تو جا رہے تھے خانہ بدوش ہو کر
آواز لگا کر پوچھتے ہو آواز لگائی کسی نے

ग़ज़ल

सराब[1] थी तेरी मुहब्बत भटकता रहा में दरबदर[2]
तू ही ना मिला किस को देता अपने मरने की ख़बर
हर बार तेरे दर से मायूस[3] लौट आया मगर
क्या करूँ यह तिशना[4] दिल है बहुत बेसबर[5]
हुस्न तज़ीन–ए–जिस्म[6] है तो दर्द–ए–उम्र[7]
हवस[8] में मलबूस[9] था जिसने भी डाली नज़र
बेशुमार थे रास्ते बहुत मिले राहगीर[10]
पोंछ ले आँसू मेरे मिला न कोई हमसफ़र[11]
तेरा दिल पत्थर है या तेरी कोई मजबूरी
छूटेगा न मगर तेरी राह से मेरा गुज़र

रूबाई

आग लगा कर पूछते हो आग लगाई किस ने
बात बना कर पूछते हो बात बनाई किस ने
हम तो जा रहे थे ख़ाना बदोश[12] हो कर
आवाज़ लगा कर पूछते हो आवाज़ लगाई किसने

---

1. मृगतृष्णा, 2. जगह जगह, 3. हताश, 4. प्यासा, 5. अधीर, 6. शरीर का श्रृंगार, 7.जीवन पीड़ा, 8. तृष्णा, 9. लिप्त, 10. पथिक, 11. सहचर, 12. बंजारा,

غزل

قلم شاعر کی اپنی زباں ہوتی ہے
لیلیٰ مجنوں جب حرفوں میں بیاں ہوتی ہے
مٹ جاتے ہیں حق و باطل کے جھگڑے
روح جب قفسِ عنصری سے رواں ہوتی ہے
مجموعۂ کُتب دعوی نہیں فضیلت کا
طورِ گفتگو سے شخصیت عیاں ہوتی ہے
چشمِ پرنم ہے عکس بےقراریِ دل کا
زبانِ عاشقی یارو بے زباں ہوتی ہے
برفانی ماحول میں آجاتی ہے گرمی
نگاہِ یار جب کبھی مہرباں ہوتی ہے
تم کہتے ہو رکھ لوں گا تخلص کوئی
شاعری گم نام بستیوں میں جواں ہوتی ہے

رُباعی

آئے وہ پوچھنے حال ہمارا ہوا کے ساتھ
لے گئے چین و قرار ایک نگاہ کے ساتھ
جاتے جاتے کہہ گئے فرصت میں آئیں گے کبھی
تسلی رہائی دے گئے تنہائی کی سزا کے ساتھ

ग़ज़ल

क़लम–ए–शायर[1] की अपनी ज़ुबां होती है
लैला[2] मजनूं जब हरफ़ों[3] में बया[4] होती है
मिट जाते हैं हक़–ओ–बातिल[5] के झगड़े
रूह[6] जब क़फ़स–ए–उंसरीं[7] से रवा[8] होती है
मज्मूआ–ए–कुतुब[9] दावा[10] नहीं फ़ज़ीलत[11] का
तौर–ए–गुफ़तगू[12] से शख़सियत[13] अयां[14] होती है
चश्म–ए–पुरनम[15] है अक्स[16] बेक़रारी–ए–दिल का
ज़ुबान–ए–आश्की यारो बेज़ुबाँ होती है
बरफ़ानी[17] माहौल में आ जाती है गरमी
निगाह–ए–यार जब कभी मेहरबां होती है
तुम कहते हो रख लूँगा तख़ल्लुस[18] कोई
शायरी गुमनाम बस्तियों में जवां होती है

रूबाई

आए वह पूछने हाल हमारा हवा के साथ
ले गए चैन–ओ–क़रार एक निगाह के साथ
जाते जाते कह गए फ़ुरसत में आएँगे कभी
तस्सली–ए–रिहाई दे गए तंहाई की सज़ा के साथ

---

1. कवि की लेखनी, 2. दो प्रेमी, 3. शब्दों, 4. वर्णित, 5. सत्य असत्य, 6. आत्मा, 7.मिट्टी का शरीर जो रूह का पिंजरा है, 8.चले जाना, 9.पुस्कों का भंडार, 10.प्रमाण, 11. विद्वत्ता, 12. बात चीत का ढंग, 13. व्यक्तित्व, 14. प्रकट, 15. आँसू से भरी आँखें, 16. प्रतिबिंब, 17. ठंडा वातावरण, 18. शायर का उपनाम,

غزلیں

ماضی کی تلخیاں نا پوچھ
کیسے گریں بجلیاں نا پوچھ
دیکھتے ہی اڑ گئے ہوش ہمارے
حسن آراہ کی تجلیاں نہ پوچھ
کس کس درد کا کریں ذکر ہم
ستم گر کی ستم گریاں نہ پوچھ
چھوٹا نہ دامن گرفتِ تقدیر سے
رنج و غم کی ناگہانیاں نہ پوچھ
ہم بھی کبھی رکھتے تھے سینے میں دل
عمرِ گذشتہ کی جوانیاں نہ پوچھ

☆☆☆

میری جبین کسی چوکھٹ کی محتاج نہیں ہے
سر تو ہے سلامت چاہے تاج نہیں ہے
اس ادنیٰ ہستی پر نہیں کوئی انحصار
جو کل تھا چرچاِ عالم وہ آج نہیں ہے
کچھ مفلسی نے مارا کچھ عشق نے تڑپایا
اس دوہرے مرض کا علاج نہیں ہے
کعبہ ہو یا بت خانہ یا پھر مے خانہ
لے جاؤ کہیں بھی احتجاج نہیں ہے
ہے کوشش یہی نہ دوں حسرتوں کو ہوا
ہوں صابر دشاکر اِحتیاج نہیں ہے

ग़ज़लें

माज़ी[1] की तलख़ियाँ[2] न पूछ
कैसे गिरी बिजलियाँ न पूछ
देखाते ही उड़ गए होश हमारे
हुस्नआरा[3] की तजल्लियाँ[4] न पूछ
किस किस दर्द का करें ज़िकर हम
सितमगर[5] की सितमगिरयाँ[6] न पूछ
छूटा न दामन[7] गिरिफ़्त–ए–तक़दीर[8] से
रंज–व–ग़म[9] की नागहानियाँ[10] न पूछ
हम भी कभी रखते थे सीने में दिल
उम्र–ए–गुज़श्ता[11] की जवानियाँ न पूछ

☆☆☆

मेरी जबीन [12] किसी चौखट की मोहताज [13] नहीं है
सर तो है सलामत चाहे ताज नहीं है
इस अदना[14] हस्ती पर नहीं कोई इंहिसार[15]
जो कल था चर्चा–ए–आलम [16] वह आज नहीं है
कुछ मुफ़लिसी [17] ने मारा कुछ इश्क़ ने तड़पाया
इस दोहरे मरज़ का इलाज नहीं है
काबा हो या बुतख़ाना[18] या फिर मैख़ाना[9]
ले जाओ कहीं भी एहतिजाज[20] नहीं है
है कोशिश यही न दूँ हसरतों को हवा
हूँ साबिर–ओ–शाकिर[21] एहतियाज[22] नहीं है

1.अतीत, 2.कड़वाहटें 3.सुसज्जित, अति सुन्दर, रमणी, 4.चमक, प्रकाश, 5.दुःख देने वाला, 6.जुल्म, अत्याचार, 7.साथ, 8.भागय की पकड़, 9.दुःख, पीड़ा, 10.आकस्मिक, 11.बीती हुई आयु, 12.माथा, 13.इच्छुक, 14.तुच्छ, 15.निर्भरता, 16.संसार की चर्चा, 17.निर्धनता, 18.मूर्तिपूजा का स्थान, 19.मधुशाला, 20.इंकार, 21.सहनशील, कृतक्ष, 22.आकांक्षा,

कवि परिचय

1929 में मुज़फ्फ़रगढ़ (अब पाकिस्तान में), चनाब नदी के पश्चिमी तट से 6 मील दूर, एक छाटे से नगर में जन्म हुआ।

हाई स्कूल पास करने के पश्चात 1947 में भारत प्रवास किया।

B. A., M.A. (अंग्रेज़ी) पंजाब विश्वविद्यालय से और LL.B. दिल्ली विश्वविद्यालय से किये।

1956 से 1981 तक विदेश मंत्रालय में काम करने के पश्चात अपनी इच्छा से पद छोड़ दिया। विदेश कार्यस्थानों में पाकिस्तान, इंडोनेशिया, जापान और अमेरिका सम्मिलित हैं।

वे अंग्रज़ी और उर्दू में भी लिखते हैं।

अंग्रज़ी में उनका प्रथम काव्य संकलन रावण व अन्य कविताएँ (Ravana and Other Poems) और हिन्दी में **काव्य तरंगिणी** हैं।

V- 231 राजोरी गार्डन, नई दिल्ली–110027

दूरभाष : 5117911

मूल्य : रू 60.00

US $8

प्रकाशक

समकालीन प्रकाशन

2762, राजगुरू मार्ग, पहाड़गंज, नई दिल्ली–110055

दूरभाष : 3523520, 3518197

ISBN : 81–7083–165–2

कम्पोजींग

अन्जुमन कम्पयुटर ट्रेनिंग सेनटर,

212, राउज़ ऐवेनयू, नई दिल्ली–110002

मुद्रक

बेस्ट गोल्डन ऑफसैट प्रिन्टर्स,

61, म्यूनिसिपल मार्किट,

कनॉट सर्कस, नई दिल्ली–110001

दूरभाष : 3312650

हबाब-ए-सुख़न

(काव्य जलबिंब)

किशोरी लाल

समकालीन प्रकाशन

2762, राजगुरू मार्ग, पहाड़गंज,

नई दिल्ली–110055

हबाब-ए-सुख़न

(काव्य जलबिंब)

किशोरी लाल